

जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत—

## हरगौरीविवाह नाटक

..... 'न जगति कर्ण द्वावतीर्णः ॥

श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्मल्ल महाराज एहने महोवार करिज आओर कर्म  
कत कह्य ॥

नदी, धन्य धन्य महाराज, एहना कुल एहने उचित, किछु नगर वर्णना भोजी  
कहइ छजो ॥

सूत्र, अविलम्बे कहू ॥

॥ नगरवर्णना, नदयुक्ति । गीत ॥ मालव ॥ जो ॥

जम्दनेवार घएल ठाम ठाम, भयत नगर एहे गुण अभिराम ॥

वेव मज्जल धुनि अहनिह होह, दिनकर किरण भरव वज्रोने घोइ ॥

परम करम सबका थिर नीति, ते फले काटुक होख न भीति ॥

विभुवन जननी करवि निवास, अविरेहि वेधि सबक अमिलास ॥

जनइ वंशमणि हे जगदम्बे, नृपजगज्योति मन पुर अविलम्बे ॥

॥ गीतार्थ आव । १५ति ॥

सूत्र, हे प्रिये भक्त कहलछ, परशु एहना उरसव, कजोन नृश्य उचित  
बिक ॥

नदी, हे नाथ, तबी अपेनेहि विज ॥

सूत्र, हे प्रिये, श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्मल्ल महाराज शिवभक्तिपरायण  
तल्लिका सिवाश्रित जे, कथा तबीहि उल्लास, ते हमराहु हरगौरीविवाह  
नामे जे नाटक महाराजाहिक कएल से नाथू ॥

१. यथार्थ पृष्ठ संख्या-१; ऐकसपोजर-१३क । मूल हस्तलेखमे आरम्भक कमसे  
कम एक गोट पत्रगुम नहि अछि ते 'नाम्नीश्लोक, नाम्नीगीत, सूत्रधार-  
नटीक वातालापक कियवंश आ जगज्ज्योतिर्मल्लक प्रशस्ति श्लोक नहि  
भेटैछ । प्रशस्तिश्लोकक अन्तिम चरणांशसे नाटक उपसंध्य अछि ।  
एतहिसे यथार्थ पृष्ठक गणना आरम्भ भेल ।

२. यथार्थ पृष्ठ संख्या-२; ऐकसपोजर-१३ ख ।



नदी, एहने उचित ॥

सूय, त्वराजो हमरा दुहु व्यक्ति मेना महादेव काछए जाऊ, चलह ॥

सूयनिससारणीतं ॥ नाट ॥ परिमाण ॥

उछाह सोहाओन हरक चरीत

ताहि विनेवे विवाह विहीत ॥

कोणभाषा ॥

सूय, हे प्रिये महादेवक चरित सहनहि सुन्दर, विनेव गौरीविवाह ॥

नदी, हमराहु बड, तथीउ।'ल्लास् मेना उक्तिप्रयुक्ति अति विचित्र ॥

द्वितीय कोने ॥

नदी, एहना उत्सव विलम्ब जगु कह ॥

सूय, अवश्य ॥

इति प्रथमः सम्बन्धः ॥

॥ ततो नन्दमूर्ति सहितो महादेवः प्रविशति ॥

कामोद ॥ प्र ॥

डिमिकि डिमिकि करे उमड बजावए

बसह चडल बूड धीरे धीरे आवए ॥

तपसिआ कत (कत) भेष बना(व)ए

सास गोरि दुहु विहुसि हुतावए ॥ ध्रुव ॥

खने कर जप लप खने कत बेसी

गरले डरकि पर ओहे परदेशी ॥

रहयि भूत तगे बसयि मसान

जुगे जुगे जोशिला धरयि धेवान ॥

प्रणवि प्रणवि एहु गावे कुकराए

अदबुध धिक हे परमपद पाए ॥

(महा) हे नन्दी हे भृङ्गी

॥ श्लोकः ॥ शठे कठोर चित्तोहं, भक्ते क<sup>१</sup>रुण कोमलः ।

अतो भवन्तो भक्ती न, त्यक्तुं क्षममपि क्षमा ॥

१. य० पु० सं०—३; एवम—१४ क ।

२. य० पु० सं०—४; एवम—१४ ख ।

सत्तीत

जगज्ज्योतिर्मल कुत

नन्दमूर्तिगणौ, हे प्रभो ईश्वर भक्तवत्सले हो ॥

इत्युक्त्वा नन्दमूर्तिगणौ गायतः ॥

कोराब ॥ ए ॥

धवल बसह पर चडल मदेश, भसम धवल तनु देखिष सुदेश ॥

हाडमाल धवल धवल रुपडमाल, धवल कपाल कर शशधर भाल ॥

शिरह धवल रह सुरसरि धार, धवल घएल शिर धुधुर मन्दार ॥

शिवक चरण रवि कोटि [सम] घाम, नृपजगजोति कर तपु परणाम ॥<sup>१</sup>

महादेवा, हे नन्दी हे भृङ्गी, जहिआ सज्यो सती देहत्पाप कएल

तहिआ सज्यो, मोज्यो वियोग व्याकुल रह्यो, अतपर

सती हिमालयक गृह अवतार लेलछ, हे चलह तसए

जाऊ ॥

२उभो, देवाधिदेव जे आजा ॥

॥ महादेवनिससारणीतं ॥

आशावरी ॥ खर्ज ॥

सती विओने धेरज नहि भेल

हिमगिरि भवन जनम लल्लि लेल ॥

॥ कोणभाषा ॥

महा, हे नन्दी, सती मोरा अछा शरीर ॥

नन्दी, हे प्रभु, एहने ॥

द्वितीय कोने ॥

नन्दी, हे भृङ्गी, ईश्वरक कार्ये त्वराए कह ॥

भृङ्गी, हमरा आन कजोन कार्ये ॥

इति द्वितीयः सम्बन्ध

आशावरी रागेण महादेवप्रविशति ॥

कोणभाषा

महा, हे नन्दि हिमालय सन्निधान अएलाहु ॥

नन्दी, हे देवाधिदेव अति रम्य स्थान ॥ (द्विको ॥)

नन्दी, हे प्रभो, ई श्रद्धाधम सन देखइ ली ॥

महा, हिमालय अनेक श्रद्धि तपस्या करैछ ॥ (द्विको ॥)

१. रागभजन संग्रह गीत—९, पाठान्तर नहि ।

२. य० पु० सं०—५; एवम—१५ क ।

हरगौरीविवाह नाटक

तैतिव



महा, बड़ मनोरम स्थान छन एक जोहा वै । १ यू ॥

नन्दी, जे आला ॥

॥ मालव रामेण ऋषिराधर्ष [वासु सहितः] प्रविशति ॥

॥ कोणभाषा ॥

आज आक धुधुर अनेक भेटल मालव्यादि नहि भेटले, ई आश्चर्य वड  
[वासु, जे पावल, से उत्तम] ॥ द्विको ॥

(ऋषि, ) आज मोरा दक्षिण चतुः स्थान होइछ, ते अपूर्व दर्शन होमाओ  
पार ॥

[ वासु, बहुत नीक ]

॥ ऋषीश्वर पश्यति ॥

हे देवेश मोर दशाङ्ग प्रणाम, धन्य मोर भाग्य, आज हमरा तपस्या  
साफल्य, जे ईश्वरक चरणारविन्द देखल ॥

( महा, ) [ हे ऋषि कुशलमस्तु ]

(ऋषि, ) हे परमेश्वर जोहाक गुणानुवाद करै छओ अवधान कइ ॥

[ महा, जोहाइ विश ॥ ]

॥ ऋणुक्त गीत ॥ मालव ॥ घए ॥

घर नहि संवर पहिरि वर्षवर,  
त्रिभुवनपति तोहे देवा, मोरि सेवा लो ॥  
कओने पुने अपुनइ रूप तपसी,

वड रसी ॥ ध्रुव ॥

भक्तम आनि दए ममान वास । २ कए  
पर के विए सुख ठामे, अभिरामे, लो ॥  
हीर धरिए गौग, नारि आध आनि,  
करिए ध्यान समाधी, जोनतिधी, लो ॥  
नृपजगजोति मति, शिवक चरण गति,  
अवसर विसरहु जनु, मोहि पुनु, लो ॥ १

१. य० पृ० सं० ६; एकस०—१५ ख ।

२. य० पृ० सं० ७; एकस०—१६ क ।

३. गीत संज्ञाशिका, गीत-८ ॥ पुनर्हर स्तुति नचारी ॥ श्री ॥ चो ॥

चोतिव

जगज्जोतिर्मल

महा, ऋषे वाधु वाधु ॥

[ वासु, हे पुताय, इमहु किछु कहै छी ॥

॥ वासुक्ति गीत ॥ विदु ॥ चो ॥

आए सिखल हमे ॥

सबधे हसन्ति ॥

ऋषि, हे सुभाषल

समाज गुण, कुमुदक रङ्ग घोर दिने बहि जाए,

सहजे गुण, मुगाक रङ्ग कबिहु नहि जाए, ] ॥

(महा), जोहाओ नन्दिभूजि सहित एतए रहू मोओ हिमालयक दर्शन  
कए अबै छओ ॥

ऋषि, जोहाक अधीन श्रीलोक्य ॥

॥ महादेवनिस्सारगीत ॥ वनाश्री ॥ ख ॥

शीतल सौरमे हिमगिरि सोमे,

ततहि जाएव हमे गौरिक लोभे ॥

कोणभाषा ॥

गोरी कति बडि भेलि छलि बहु ॥

द्विको ॥

आज सहजहि देखनि ह(महु) ॥

[ऋषि, हे नन्दिभूजि खन एक हमरा आश्रम विश्राम कइ  
तन्वी, तर्जवा ॥ ]

॥ ऋषिनन्दिभूजिणी जमनीपट्ट दत्ता निस्सरगति ॥

इति तृतीयः सम्बन्धः ॥

॥ अथ गोरी । २ सहिती मेनहिमालयो प्रविशतः ॥

मण्डल गीत ॥ कौशिक ॥ ए ॥

हरखित गिरिराजे देल परवेश, गोरि भेना दुहु मंगे परम सुवेश ॥

रूप गुणे समधुत देखिअ कुमारि, चुबति सबहु पर सेहे वरनारि ॥

विविध रत्ने तनु पसरलि कांति, कहनि मधुर बोल कत कत भांति ॥

नृपजगजोति कह न कर कलेष, गुअ अभिमत जत पुरत महेश ॥

१. 'रहि' सेहो पड़ल जा सकैछ ।

२. य० पृ० सं०—८; एकस०—१६ ख ।

हरगोरीविवाह नाटक

ऐतिस



हिमा, हे प्रिये हमर महिमा किछु सुनु ॥

श्लोकः ॥ हिमालयोर्द्वि विख्यातः पर्वता' नामधोस्वरः ।  
मदस्यैव भवमासायः पृथ्वी भवति निश्चला ॥

मेना, हे प्रभु, ई, एहने, हमरो किछु गोचर सुनु ॥

श्लोकः ॥ एषी विलोचना मेना, रूप शील समन्विता ।  
त्वत्पाव युष्मिन्नाम्भोजे, तिरसाधारमास्महं ॥

[गौरी हे तातः, हे मातः, किछु विज्ञप्ति हमरो ॥

उमो, हे प्राणप्रिये पुत्रि, कहू कहू ॥

श्लोकः ॥

(गौरी) गिरिराज पित्रस्तव पादयुग्मं दत्तं निज्जित शोण तरोज इलं ।  
परमं च तवापि च भक्ति यथा, न्मनसा कलये वसुधा बलये ॥

उमो, ताधु माधु ॥

हिमा, हे प्रिये जेहाक शील जेहन थी(क), परन्तु, कजोन कजोनओ  
गौरीक चरित्र देखि परम आनन्द होईछ ॥

मेना, हे ताव बालचरित्र अद्भुत ॥

॥ ततो योगिवेशो महादेवो गीतेन प्रविशति ॥

मालव ॥ ए ॥

पुलकित तनु मोर रे रे तनु गुण सुमरि सुमरि अभिरामे,  
हृदय धुड़ाओन रे रे छिति मरि देखव वदन हिमधामे ॥

कोणभाषा ॥

कजोन व्याज कए गौरी हने देखविह ॥ द्विको ॥

हम ए बेवे के चिद्गत ॥

॥ मेना महादेवो परस्परमवलोकयतः ॥

महा, हे मा [ता], जेहाक कथा कहिनि छथि ॥

मेना, हे प्रभु, एहि मिलारीक उक्ति सुन छी ॥

१. 'विख्यातः पर्वता' उचित होयत ।

२. य० पृ० सं०—९; एवम—१७क ।

छत्तिस

जगज्ज्योतिर्मन्त्र कृत

॥ मेनाक्ति गीत ॥ कोराव ॥ चो ॥

१ परतह पुछ मोहि बाबलि भवानी, कतिएक भेलि अष्टि देखए वेह जाना ॥

भीखि बैजलि वास मोर आवे, मनमोहन जोगिया भल गावे ॥ ध्रुव ॥

ए माइ हे मोहि अजगुस जागु, सुतलि गौरि जोगिया देखि जागु ॥

जाहि जोगिया देखि दुरहि पराई, ताहि जोगिया कोर गोरि खेलाई ॥

मनइ विद्यापति मदायिनि सुनु, ओ जोगिया घर होएत पुनु पुनु ॥

हे गिरिराज, अओरो कौतुक देखई छी, ओ जोगिया हमरि  
कुमारि देखि हसैछ ॥

[हिमा, जोगी कौतुका]

॥ मेनाक्ति गीत ॥ असावरा ॥ चो ॥

बैजहो ये माइ हे जोगि रङ्गरतिमा,

गौरि मुख हेरि हेरि हसए विहुसिआ ॥

विभूति भूषण गिम कणिमणि शोभे, राजकुमारि कत लावए लोभे ॥

१ शिर क्षणधर करे हमर धजावे, चञ्चल लोचन मनमथ भावे ॥

पुतपुत आवए हटल न माने, कवने परि बोलव वचन निदाने ॥

मनइ तवानन्द करह उछाहे, बड समुचित गौरि संकर माहे ॥

हे जोगी तोहर ई कजोन भाति, हाडमाल साप टाड जटाजूट भस्मकूट

शूल हाथ डमरु बजाए की मैनी छह, इ अन्न भिक्षा लेह ॥

॥ महादेवो मिश्रात्मनत्वा सोरडिरागेण निस्सरति ॥

कोणभाषा ॥

हमे कट्याश्रम जाएव ॥ द्विको ॥ एतए कृषि पठओनाह ।

मेना, हे गिरिराज बड आश्चर्य, जोगी भिक्षा त्यजि खेलाह ॥

हिमा, जोगी मज्जी रज्जी त[कर] मन के जान, कुमारी योग्य भेलि, एक

शिखर भए बिबाहक चिन्ता । १ कर गए ॥

१. य० पृ० सं०—१०; एवम—१७ख ।

२. य० पृ० सं०—११; एवम—१८क ।

३. य० पृ० सं०—१२; एवम—१८ख ।

हरगौरीविवाह नाटक

सैतिस



[मेना, प्राणेश्वर, हमे स्त्री जाति का पुरुष आशा मानिय, ए  
वम चल् ] ॥

॥ मेनाहिमालयी गानेन निस्सरति ॥

सोरठि ॥ छ ॥

मन्मथे गान कर गगन दु'दुनि वाज, वेध तारि सवे नावे,  
रुये पुने आगरि त्रिभुवन नागरि, के नहि मोरि मोरि पावे ॥

॥ कोणभाषा ॥

हिमा, हे त्रिये हमर घर सखे संपूर्ण विवाह जव लाइय सेहे सारक ॥

मेना, जोहा हित्त

॥ द्विको ॥

मेना, इन्द्रादि देवगण मंगेछ कस्या ॥

हिमा, ओहे शिखर गए विवाह ॥

इति चतुर्थः सम्बन्धः ॥

॥ जमनीवट्ट दत्ता नन्दिभूजि सहितः ऋषिः प्रविशति ॥  
ऋषि, हे नन्दीश्वर, ईश्वर सज्जी दर्शन पुनु होएत की नही ॥

[उभो, ऋषीश्वर अवश्य होएत] ॥

॥ महादेवो मालव रागेण प्रविशति ॥

कोणभाषा ॥

स्वराए जाएय ॥ द्विको ॥ आहाहा कहैत । 'गोरीक रूप ॥

॥ महादेवो नन्दिभूजिः ऋषीन् पश्यति ॥ सर्वमहादेववरणे पश्यति ॥

ऋषि, हे नाथ, अपने बड़ सानन्द स्वरूप देखइ छिज ॥

महा, हे ऋषिराज बिस्तार कत कहव, जोहाओ हिमालय पाहि कस्या मासि  
विशयो, हमे विवाह करव ॥

ऋषि, मोर बड़ भाग्य मोजो जाई छजो ॥

१. य० पृ० सं०—१३; एतस०—१९क ।

२. 'छिजइ' लीखि 'ह' केर साथ पर तीन गोठ ठाड देखा देल छेक । ई 'ह' के  
कटबाक संकेत लगैछ ।

अठित्त

॥ ऋषिगोत्रेन निस्सरति ॥

गोपीवल्लभ ॥ प्र ॥

हरक जरिख बिचित्र पवित्र बसहु चडल गिरि आवे ।  
हमहु जाएव गिरिराजक सन्निधि ते सुरगण सुख पावे ॥

कोणभाषा ॥

घन्य मोर भाग्य ईश्वरे मोरा के आशा कएल ॥ द्विको ॥  
हिमालयहुक घन्य भाग्य जलिका ठामे महादेव पावना करै छयि ॥

[ महा, ऋषि हमे ओतए पठओलाह एहि मनोहर, ऋषि आश्वम  
खनेक रहव ]

उभो, देवादेश प्रमाण ] ॥

॥ जमनीवट्ट दत्ता महादे 'वो निस्सरति' ॥

इति पञ्चमः सम्बन्धः ॥

॥ गोरी सहितो मेनाहिमालयी मालव रागेण प्रविशति ॥

॥ कोण भाषा ॥

हिमा, हे त्रिये एहि शिखर कहैत कहैत पुण्य सवे ॥

मेना, हे प्रभो आमोदे प्रमोव होइछ ॥ द्विको ॥

मेना, हे प्रभु अनेक अनेक रङ्ग फल सवे देखई छी ॥

हिमा, तेहि एए अएलाहु ॥

हिमा, एहना रम्य स्थल खण एक विश्राम कर ॥

मेना, हे प्रभु जोग्य ॥

॥ ऋषिः पृथ्विया रागेण प्रविशति ॥

कोणभाषा ॥

हिमालयक बड़ भाग्य ॥ द्विको ॥ हिमालय पर विवाताक, बड़ कृपा ॥

॥ हिमालय ऋषि दृष्ट्वा प्रणमति ॥

हमरा कयाविवाहक समय जोहाओ अएलाह बड़ भाग्य ॥

१. य० पृ० सं०—१४; एतस०—१९ख ।

२. एतस छूट चिल्ल बड ऊपरमे एकटा अक्षर छेक जे दुष्पाठय छेक ।

हरगोरीविवाह नाटक

जनशालिस

जमनीवट्टातिमालव



श्रुति, हे गिरिराज ओहाक । 'बड भाग्य ते हमेअएलाहु, परन्तु ओहाओ  
वर केओ विचारलछ की नही ॥

हिमा, अनेक देवता मगई छथि, से व्यवत नही कएल छए ॥

श्रुति, चतुर्वंश भूवर्गक सृष्टि स्थिति प्रलय कर्ता देवाधिदेव महादेव ओहाक  
कन्या मंगई छथि ते हमे अएलाहु ॥

हिमालयो विस्मितस्त्वृष्णी तिष्ठति ॥

मेना, हे श्रुतीश्वर, एहन कहिनी ओहाए आजल छी, ओ ममान-  
बास भङ्ग शास, वृषयान विषयान, हाडमाल बाधछाल,  
भूल सङ्ग प्रेतरङ्ग, कर कपाल झाल हार, जडाकू(जू)ट  
विकट रूप, धूलि घूसर नाममात्र ईश्वर, एहना के कन्या के  
देत, कओने साजेबा(जे?) ओ, विशाह करए अओताह,  
किछु मुनु ॥

॥ मेनेवित गीत ॥ पह<sup>१</sup>डिया ॥ टुटापरि ॥

कैसे आओत विशाहक राज, नागट समत तल्लि न लाज ॥

गजक चरम बाधक छाल, ओडिए धरिए कर कपाल ॥

भस्म धवल सगर देह, गिरिमुता कैसे करति नेह ॥

नृपजगजोति एहेन भाग, तिव छाड़ि तिन लोक न आन ॥<sup>२</sup>

॥ गीतार्थ आवयति ॥

श्रुतिश्रवणं हृत्तो दत्वा रोमाञ्चमभिनीय

[स्त्री जाति विविध भाति, मोख मति, चपल मति, पाप पुर,  
धर्म दूर, बहुत बाज, किछु न लाज, रह न बीर, जति समीर,  
अधिक शास, न मान शास, नायिक\* बुद्धि, मन अशुद्धि, परम मूढ़,  
हुदय मूढ़, काकचेष्ट, कामगुण्ट, बोल तुहर, कर्म जहर, वामा  
नाम, कण्ठ धाम, काम कोह, लोभ मोह, इत्यादि संयुक्ति तोहे (?)

१. य० पृ० सं०—१५; एवस०—२०क।

२. य० पृ० सं०—१६; एवस०—२०ख।

३. नानारागगीत संग्रह, गीत—१५। पाठान्तर—आवत, नागत।

४. 'ति' पंक्ति उपरमे लिखल अछि।

चालिस

जगज्ज्योतिर्मल कुल

[हे मदाइनि, वैलोवनाथ महादेव के एहन बजई छह, शिव शिव शिव ॥] हे  
मेना तोहें स्त्री जाति, महादेवक स्वरूप का जानह, सुनह ॥

श्रुत्युक्ति गीत ॥ पह<sup>१</sup>डिया ॥ ए ॥

गज बाध चरम सोभए कत अङ्ग, भस्म धवल कएल जाति अनङ्ग ॥

नागट समत के जानत भेव, जल्लिक सल्लन नहि बुझए वेद ॥

हुनि भल चिह्न गिरिराज कुमारी, जल्लिकाइ भेलि जुगे जुगे तपधारी ॥

नृपजगजोति बुझायए<sup>२</sup> भाव, तबहि काल तिव सरण सोहाव ॥<sup>३</sup>

[गीतार्थ आवयति<sup>४</sup> ॥]

हे मेना अओरो सुनह ॥

॥ श्रुत्युक्तिगीत ॥ केदारा ॥ प्र ॥

अपना सुतके सवे कह नीक, गुणि जन वूझए ऊन अधीक ॥

सुबुधि बुझाओव किछु न कलेश, अवुधिक मन हो हरि उपवेश ॥

स्वगुण प्रकाश कहैते नहि लाज, तकरा कहला कीदहु काज ॥

प्रसव वेदन गुरुविनि पए जान, बाँझ न वुझ तकर अनुमान ॥

नृपजगजोति कह मेदिनि घोर, धृष्टनिहार एक नन्दकिसोर ॥

तोहर परम भाग्य, महादेव तोहर अर्धी होइ छथि ॥

[मेना, हे नाथ, जे जोगिमेष कए, अएलाह, सेह नहि महादेव ॥

हिमा, हे सुन्दरी ओ अनादि प्रत्यस्वरूप, हुनका के एहन नव(र)गिज, विशाह  
तखम कर ॥ ]<sup>४</sup>

हिमा, हे श्रुतीश्वर ओहाओ सर्वज्ञ के ओहाक इछा, ॥

श्रुति, हे गिरिराज, मोओ महादेव लेआए अनह छत्रों ॥

१. य० पृ० सं०—१७; एवस—२१क।

२. नानारागगीत संग्रह, गीत—१६। भक्तिरस नचारी गीत। पाठान्तर—  
बुझर, जुगे जुगे।

३. मूलमे 'आवयवति' अछि।

४. ई अंश पत्रक नीचमे लोखि अन्तमे पंक्ति संख्या बेत गेल छैक।  
परन्तु पत्रक तत्संशयक मूल पंक्ति में छूट चिह्न नहि देल अछि।

हरगोरीबिबाहु नाटक

एकतालिख



ऋषिः ॥ केधारा ॥<sup>१</sup> रागेण निस्सरति ॥

कोणभाषा ॥

ईश्वर कृपाए हमरा कार्यसिद्धि भेल ॥ द्विको ॥ ईश्वर कार्यसिद्धि होएत  
ई कज्जोम बिज ॥

[हिमा, हे प्रिये विवाह कार्य त्वराए कह

मेना<sup>२</sup>, हे प्रभु करव, ]

मेना हिमालयौ जमनीपट्ट<sup>३</sup> वत्वा निस्सरति ॥

इति षष्ठः सम्बन्धः ॥

॥ ततो जमनीपट्ट<sup>३</sup> वत्वा महादेवप्रविशत ॥

महा, हे नन्दीश्वर ऋषि का किए बिलम्ब भेल ॥

नन्दी, मोलौ द्वार भए, बाट हेरए छोरो ॥

॥ तत ऋषि बामू, गीतेच(न) प्रविशतः ॥

॥ मालव ॥ चो ॥

तत्पश्चात् पात सरिण सरि दुर गेल, पुनु नव पल्लवे भेल

सती बिओम हरहि हिस हारल, होएत दुहु अवे मेल ॥

सकल मन सानद रे परिहरि जल किछु दद ॥

दशहु दिन<sup>१</sup> ]

॥ कोणभाषा ॥

(ऋषि) त्वराए जाएव ॥ द्विको ॥ महादेवक चरम सन्धना करव गए ॥

नन्दी, ऋषिदृष्ट्वा वदति ॥

हे ऋषीश्वर ओहाहिक पथ हेरइते छलाहु त्वराए भीतर चल ॥

ऋषि, जे आशा ॥

१. य० पृ० सं०—१८; एवम-२१ ख ।

२. 'मेना' शब्द एहठाम छूटल छेक तँ छूट बिहू वऽ कऽ ओहूतँ ऊपरमे  
लखल छेक ।

३. गीत अपूर्ण अछि ।

वेतालिस

जगज्ज्योतिर्मल कुत

॥ ऋषिर्महारेवं दृष्ट्वा कुताञ्जलिः स्तौति ॥

१॥ श्लोकः ॥ अश्वमेध सहासि, वाशमेध सतानि च ।

महेवाचर्चन पुण्यस्य, कला गार्हन्ति शोचसी ॥

[ श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्मल महाराजनस्वन, शशिधरसिंह कएल, जेहाक भक्ति  
गीत एक गवै छी ॥ ]

॥ धना ॥ चो ॥

तोहर कृपाए रह दश विकपल, मोलौ कि कहव हर तोहहि कृपाल ॥  
हर विनति हमार सरण तोहार ॥ ध्रु ॥

महिमा तोहर कहव कज्जोने मती, जनमे जनने शिव तोहे पए गती ॥

बलपहु भगति होअहु परसने, आक धुबुर फुले पुज सबे जने ॥

सीर संदाकिनि रासधर भाल, बाध चरम ओड़ भूपण ब्याल ॥

सिधि निधि दाता जगत किसान, शशिधर केसरि एहो भान ॥ ]

महा, हे ऋषीश्वर, कज्जोम वार्ता ॥

ऋषि, अबिलम्ब प्रयाण करे ॥

॥ सर्वे मिलित्वा गीतेन निस्सरन्ति ॥

महाराी ॥ प्र ॥

वसहु घवाओल समीरण जीनि,

पौच वचन हर लोचन जीनि ॥

कोणभाषा ॥

महा, हे ऋषीश्वर, एहने वेने अओरो किछु बलु ॥

ऋषि, जे आशा

॥ द्विको ॥

ऋषि, हे नाथ एहा सजो, ओहो विवाह मण्डप देखइ छी ॥

महा, मधुरहासेन ऋषि बिलोकयति ॥

इति सप्तमः सम्बन्धः

१. य० पृ० सं०—१९; एवम०—२२ क ।

हरगौरीविवाह नाटक

तेतालिस



॥ सपरवारो हिमालयो जमनीपट्ट दत्वा प्रविशति ॥

हिमा, हे मेना, विवाहक लग्न निकट आएल, ईश्वर नहि अ'एलाह ॥

मेना, जोहाको जोहने वर जोहल ॥

[मेना, हे दायिलोके गौरीक पसाहनि कल ॥

विधि, मैजो ओहे करे छी, गौरीमुविश्य,  
ए वेठिआ एतए आऊ, पसाहनि करव ॥

गौरी, अएलाहु ॥ ]

आसावरी रागेण महादेवप्रविशति ॥

कोणमाया ॥

महा, हे ऋषीश्वर वड रम्य स्थान ॥

ऋषि, गौरीक गुने ॥ द्विको ॥

[ ऋषि, हे ईश्वर, विलम्बि चल ॥

महा, ऋषि उत्तम कहर ॥ ]

हिमा, प्रिये, कुमुम मृष्टि होइछ, स्वर्ग अनेक दुनुभि वाच वजइछ  
मोरे जाने महादेव अएलाह, मोअे आगु गए लेआए अनबाह ॥

हिमालयो गत्वा महादेव राजोपचारैस्संपूज्य गृहमानवति ॥

हिमा, हे ईश्वर वड भाग्य मोर, जोहाक चरण कमल देखल (मोअो  
राजोपचार पूजा करे छओ ॥ )

॥ महादेवः सलग्नमधोमुखस्तिष्ठति ॥

[ हिमा, हे ऋषि पुङ्गव, ईश्वर सहिते, विवाह मण्डप विजय कल ॥  
वासु, अट्टाट्टहासेन हसति ॥  
तत्र मण्डपे ॥ ]

हिमा, लग्न निकट आएल विलम्ब जनु करिअ ॥

ऋषि, हे गिरिराज, विलम्बक अवसर नही ॥

१. य० पृ० सं०—२०; एवम—२२ ख ।

चोबालिस

लग्नमधोमुखस्तिष्ठति

हिमा, हे ऋषीश्वर सभे सामग्री उत्पन्न अछि ॥ १ ]

१. यतः कङ्कण ध्वनत् ॥

ऋषि, हे ईश्वर, पहिले पाद प्रक्षालन कल ॥

महा, अवश्य ॥

ऋषि, हे गिरिराज, ऊसरि, मूसर, साडी घान, विअर सुत, आम्बक पात  
आनि दि(अ) ॥

[ [ १ याव वनाश्री ॥ चो ॥

अथ अथ मल २ ॥ अ० ॥

विअर सुत वेठव नव जना, ए विधि सोहवि विआह रचना ॥

हर कर कंकण प्रथमहि फेर, विदुति विदुसि मुनि मुख सये हेर ॥

हर कर कंकण दोसर फेर, आठहु जना आठ दिस घेर ॥

हर कर कंकण तेसर फेर, देखिहहि सब (मन) दुख दुर गेल ॥

हर कर कंकण चारिम फेर, सुरगणे कुमुम मृष्टि कए देल ॥

हर कर कंकण पाचम फेर, कितर कोतुक गावए लेल ॥

हर कर कंकण छठम फेर, हरविध देवनारि सब खेल ॥

हर कर कंकण सातम फेर, एकहि अओक कुतूहले ठेल ॥

हर कर कंकण आठम फेर, सकल सुरासुर धानध्व भेल ॥

साठिक चाडर आविक पात, कंकण बाधव धंकर गात ॥

नृपजगजोतिमल्ल कोतुके गाय, लाख एक दुइ दुसए भाव ॥ १ ] ]

॥ ऋष्युक्ति गीत ॥ आसावरी सज ॥

कोतुक एक वड भिला, जखने महादेव बेदी गेला ॥

जटा हुलु अँकुति लाई, शिकहेते गुरसरि (गेलि) बढिआई ॥

१. य० पृ० सं०—२१; एवम—२३ क ।

२. एहि ठाम (पत्रक द्वितीय पंक्तिमे) छूट चित्त देल छैक किन्तु पत्रक कोनो  
कातमे सन्वर्ध सङ्गत छूटल अंश लिखित नहि छैक । वस्तुतः एहि सन्दर्भक  
एकटा सम्पूर्ण गीत एवम—१क पर अछि जे 'एक' अङ्क सन चित्त दऽ  
कऽ आरम्भ कयल गेल अछि । अतः एवम—१क केर गीत (जे सौसे पत्रमे  
अछि) एतः य० पृ० सं०—२१; एवम—२३कमे द्विकोठमे निबद्ध कऽ  
अन्तर्भूत कयल गेल अछि ।

३. एवम१क अन्तर्भूत ।

हरगौरीविवाह नाटक

पैतालिस



बसहए हलु कुस खाई, लावा देखि फनि उठल कोफाई ।  
छावा भासल जाई, भुलल बासुकि बिछि बिछि खाई ॥  
बास छाल भासल जाई, फनि फुफुकारे बसह विधुजाई ॥  
विद्यापति कवि ईश पुमाउ, रूपनरायण होय चिराउ ॥  
ईश्वर चरित तेहि तेहि भौति सुखर ॥

(मेना) [ हे ऋषीश्वर हमरो गोचर सुनु, ] ॥

॥ मेनोवित गीत ॥ मालव ॥ ख, ए, [चो] ॥

पञ्चानन ॥ न पुरमथन भयङ्कर शंकर नाम कवने धरिआ,  
लिनि मयन हर एक हुताशन न जानए कुल कवन अवतरिआ ॥

१. ई गीत परिवर्तित रूपमे मिथिलामे प्रचलित अछि । प्रचलनमे एकर बुद्ध  
गोठ रूप अछि ।

(क) कवीश्वर जन्दाहाक सङ्कलन गीत—१६ ।

जानन भरल बटाव । उमत मनाशिव भसम लोटाव ॥  
मनाइनि देखि जमाय । हम नै पशैलव एहन जमाय ॥  
गरी देल बोपटा लगाय । उर फनिवति उठलाह फुफुआय ।  
जटा देल अँकुशी लगाय । शिर गुरसरि जल गेली बडिआय ॥  
वेदी देल लावा छिड़िआय । भुलल बासुकि चुनिचुनि लाय ॥  
सुकवि विद्यापति गाव । हर परसन वर गिरजा पाव ॥

(ख) मिथिलागीतसंग्रह, खण्ड—१; मित्र-मनुमथार, गीत—९०३ ।

हे मनाइनि देखह जमाय ।  
शिवक माय फुटल जटा । आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥  
जटा देल अँकुशी लगाय । आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥  
सिकितहि गुरसरि गेल बहराय ।  
वेदी देल लावा छिड़िआय । आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥  
भुलल बासुकि बिछिबिछि लाय ।  
बट्टा भरि चोरल कलाय । आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥  
उमत महादेव भसम लगाय ।  
भनहि विद्यापति गाओल । आगे माइ गोरिछहिन वर कोबर जाय ॥

२. य० पृ० सं०—२२; एक्स—२३ख ।

प्रियासि

जगज्ज्योतिर्मल

माए न बाप साप संगे खेलए मेलए भसम विगत भारी,  
मनमथ मारि नारि आलिंगन उमत बुझाय कजोन परी ॥  
[ पावन गीम मथा यदि मोवहि गोवहि काइ जटा विप(ध ?), नी,  
संसय तोरि दे गोरि बुझावए इति अनुचित अनुचित अपनी ॥ ]  
भनइ विद्यापति सुनह मनाइनि कजोने बुझाओत जगत मुख,  
राजा शिवसिंह रूपनरायण सकल पाषक जन कलपतक ॥  
हे ऋषीश्वर, महादेवक अति विचित्र चरित बुझिनिहि जाइ  
छए ॥<sup>१</sup>

[ [ १ वरारो ॥ ] ]

विहित विवाह उगारव, मुगमद चन्दन गारव,  
माइ हे, उवटन साखव रे ॥  
ई सवे हुनि न सोहावए, आक धुधुर पत्र भावए  
माइ हे, आंग भसम लावए रे ॥  
विषम भुजगमय भूषण, अओर कहुव कत रूपण,  
माइ हे, साखव अनुसन रे ॥  
आँख नयन कजोने भौति, पसरने सुख अनल काँति,  
माइ हे, कर मोरा होअ सौति रे ॥  
नृप जगज्ज्योतिमल भागे, ओहे हर सबक निदामे,  
माइ हे, जगजन जाने रे ॥  
॥ सर्वमिलित्या कौतुकागार गीत गायन्ति ॥

बनाश्री ॥ प्र ॥

शिने सिरिजल एहे विभुवन, विभुवन धारण कारण ॥

कम जय मङ्गल सर ॥

१. एहि ठाम बकरेखा जकाँ विचित्र छूट चिह्न समाओल अछि ।

एक्स०-१२ क पर 'एक' अङ्क सन छूट सङ्कोतक चिह्न वऽ 'वरारी' रागमे  
एक गोठ गीत अछि जे ओहि पत्र पर पाँच पंक्तिमे सम्पन्न भेल अछि ।  
ओहि गीतक प्रत्यक्ष निश्चय होइछ जे एही स्थलक छूटल गीत थीक ।  
अत ओहि गीतके एतऽ अन्तर्भुक्त कयल गेल अछि ।

२. एक्स० १२क केर पहिल पाँच पंक्तिक गीत एतऽधरि कोष्ठरूपमे निबद्ध  
कऽ अन्तर्भुक्त कयल गेल अछि ।

हरगोरोविवाह नाटक

संताकित



फणिमणि सोहित मुन्दर, मुन्दर ।<sup>१</sup> र चबलमहेशर  
अनल चाँद रवि लोचन, लोचन देखि मुख मोचन ॥  
धरिअ अभय वर दुइ कर, दुइ कर बिजूल डमरु कर ॥  
नृपजगजोति गाय कोबर, कोबर गाने पापहर ॥  
महा, हे गिरिराज हमे पूर्ण मनोरथ भेलाहु<sup>२</sup> अतपर, हमरा अनुशा दिअओ,  
हमे आश्रम जाओ ॥<sup>३</sup>

( हिमा, ) [ [ ४ हे नाथ, मोरा किछु गोचर करै छाओ ।

॥ हिमालय मेनोक्ति गीत ॥

मालव ॥ चो ॥

तुअ पद जोर, सकल सुरासुरे वन्दिअ,  
कि पुर आशा, सबय हृदय सोहे दिगधासा ॥  
बिनब मन्त्री ओरे, गोरि, गोरि प्रतिपालवि,  
कि अत जिव, सवहि बेआपित सोहे शिव ॥  
गिरि पर मोर, गगन गरज मुनि हरलए,  
की अंसन, तहेन देखि हमे जिनवन ॥  
अविनय धोर, जे किछु पडल मोर,  
सोहे सबे, की अविरल, खेमहु कृपा कए, विसेसर  
आनन्दे मोर, अखोर पुलके पुर तनु मोर,  
की निज सति, बनए अगति नृपजगजोति ॥

गीतार्थ आवयति ॥ ॥४॥ ]

हिमा, हे ईश्वर, ओहायो जगद्वेश भुवनक अधिपति, जहेन इच्छा हो ॥

१. य० पु० सं०—२३; एवम—२४ क ।

२. एहि ठाम छूट चित्त (.) ओ चित्तक ऊपर से '४' अंक देल छैक ।

३. एतहु (.) एतहु छूट चित्त अछि । आगा २४ छ पर लिखित वाक्य ओ गीत  
एहि वाक्यक बादे समीचीन अछि ।

४. य० पु० सं०—२३; एवम—२४कमे छूटल हिमालयक गल कथन एवं गीत  
एवम—२४छ पर 'चारि' अंक सीखि कऽ अंकित अछि । अतः ओहि समस्त  
अंसके कोठ हवमे निबड कऽ य० पु० सं०—२३, एवम—२४कमे एतऽ धरि  
अन्तर्भूक्त कऽ देल गेल अछि ।

अठनालिस

जगजगजोति मालव

॥ महादेवसगणो गीतेन निरुत्तरति ॥ देशाख ॥ ए ॥

बिहित विवाह काहि नहि लोह,  
अतमे अनमे हर' गोरहि सोह ॥

कोणभाषा ॥

अहा, हे पार्वती, ओहायो अगला, एहि बसह चढि लिअओ ॥

गौरी सलज्जं मधुरं विलोकते ॥ द्विको ॥

अहि, हे ईश्वर<sup>२</sup>, गौरी राजकन्या, अति कोमल, नहु नहु चलू ॥

महा, हे ऋषीश्वर सर्वथा ॥ ॥

मेना, हे प्रभु गौरी विनु उद्वेग बड होईछ ॥

हिमा, ओ शैलोनयनाथ ॥

मेना, हे प्रभु हमर गोचर सुनु ॥

॥ मेनोक्ति गीत ॥ सौहे ॥ प्र ॥ ए ॥

मल शिवशंकर भोरा, बुझल जतीवन तोरा, अति गौरा लो ॥  
तपोवन अछल तपसी, बिकह सकलगुण रसी, शिर बसी लो ॥  
जय तप सबे दुर गेला, रमणि रङ्ग मन देला, ए कि भेला लो ॥  
कण्ठ कोलवि मधुवाणी, हरलहि मोरि भवानी, अति जानी लो ॥  
काँधहि इण्डेर भाला, पहिरन बाधेरि छाला, फणिमाला लो ॥  
बिष्णुपुरी शिवदासे, परिपूरयु मोर आसे, विगवासे लो ॥

हिमा, ओ ईश्वर शैलोनयनाथ, हुनक चरित सोहे की जानहु, मल आओ  
हमरा कन्या गेलि, ईश्वरे स्नेहे अछ'गरीर, कीलि छिअवि से मोओ  
कहै छाओ सुनु ॥

॥ हिमालयमेनोक्तिगीत ॥ वनाओ ॥ [प्र] लज ॥

जय जय वाङ्मुर जय त्रिपुरारी, जय अशपुष्य जय अघनारी ॥

आष षडल वर आषा गोरा, आष वाच छाल आष पटोरा ॥

१. 'हम' एवं 'हम' सेहो पडल जा सकैछ ।

१. य० पु० सं०—२४; एवम—१ख ।

३. य० पु० सं०—२३; एवम—२क ।

हरगौरीविवाह नाटक

उमचास



आध योग आध भोग बिलासा । आध पिनाक आध नगवासा ॥  
 आध हाल माल आधा मोति । आध चन्दन शोभे आध विभूति ॥  
 आध चाँद आध सिन्दुर सोहे । आध विरूप आध जग मोहे ॥  
 भने कविरतन<sup>१</sup> बिधाता जाने । दुष्ट कर बाटल एक पराणे ॥<sup>२</sup>  
 हे मेना । गौरी विवाह सम्पूर्ण भैल । अन्तर । हमरा अन्तःपुर  
 गाऊ ॥

मेना । हे प्रभु । एहने योग्य ॥

१. मूलमे 'कविरतन'के पंक्तिक ऊपरमे कुछ विसर्ग सम्बन्धेसँ घेरि कऽ पत्रक  
 अधोभागमे 'विद्यापति' विकल्प पाठ केल गेल अछि, किन्तु 'विद्यापति' रहने  
 छन्दोर्ध्व भऽ जाइछ ।

२. ई गीत 'नेपालपदावली'मे भगिता-विहीन गीतरूपमे भेटैछ । गीत इन्द्रवज्र  
 धिक—

जए जए गङ्गुर जए विपुरारि । जए अधपुरुष जए अवतारि ॥ ध्रु ॥  
 आधा धवल आधा तनु गोरा । आध सहज आध कठोरा ॥  
 आध हुडमाला आधा मोती । आध चन्दन शोभे आध विभूती ॥  
 आध चेतन मति आधा मोरा । आध पटोरे आध मुकुटोरा ॥  
 आध जोग आध भोग बिलासा । आध पिनाक आध नगवासा ॥  
 आध चान्द आध सिन्दुर सोभा । आध विरूप आध जग लोभा ॥

—विद्यापति पदावली, भाग— १, पृ०-३७५—७६, बिहार राष्ट्रभाषा  
 परिषद पटना ।

सँह गीत रागतरङ्गिणीमे धनछी रागक शास्त्रकी प्रवेशक उदाहरणमे  
 कविरतनक भगिता युक्त भेटैछ । रागतरङ्गिणीमे रागान्तर कम अछि किन्तु  
 जे अछि ते विशेष उचान देवा योग्य । रागतरङ्गिणी (पृ० १०५) क गीत निम्न  
 रूपक अछि—

जय जय गङ्गुर जय विपुरारी । जय अधपुरुष जय अवतारि ॥  
 आध धवल तनु आध तनु गोरा । आध पटोरे आध मुकुटोरा ॥  
 आध जोग आध भोग बिलासा । आध पिनाक आध नगवासा ॥  
 आध सिन्दुर सिन्दुर आध विभूती । आध हुडमाल आध गजमोती ॥  
 भने कविरतन बिधाता जाने । दुष्ट कर बाटल एक पराणे ॥

२. पृ० पृ० सँ— २६; पृष्ठ— २४ ।

पञ्चास

रागतरङ्गिणीकेसँ

मेना हिमालयी गीतेन चिन्तितः ॥

मालव ॥ख॥

शिखर सक्षर मुनिहु नहि जानी ।

एक ओहे जानवि मोरि भवानी

सिय के चरण चरण ॥ ३१ ॥

॥ कोणभाषा ॥

(हिमा ) हे मेना । धन्य मोर भाग्य । बहुवर्ष भुवनाधिपति श्रीमहादेव  
 जमाता

मेना । ईश्वरहि कृपाजे ॥

द्वितीय (कोणे) ॥

हिमा । धन्य मोरि कोण । जहि भवानी जन्म लेल ।

हिमा । तहि भवानीसँकर स्मरण करैते रह्य गए ॥ ॥

इन्द्रवज्रः संक्षेपः ॥

॥ श्रीगौरी सहिजे महादेवो वराही रामेश प्रविणति ॥

कोणभाषा ॥

महा । हे श्रीपुनर्व । ई भान्जनी नदी अति पवित्र हमरा हाथ सखी ई  
 सहिभूति केलहु ॥

श्रुति । अति सुशीतल जल ॥

द्विती ॥

श्रुति । हे ईश्वर । ओहाजे पशुपति नामे । कजोन ठमा रहिअ ॥

महा । एहे अल्लाहु । ये ठमा ॥

महा । हे श्रीपुनर्व । ई हिमालयक प्रत्यन्त पर्वत ई नेपाल मण्डल अति  
 पवित्र । तथुहु ई भान्जनी नदी । ई पशुपति स्थान । ई गुह्येश्वरी  
 पीठ । ई पृथ्वीहि सार थीक ॥

हरगौरीविवाह नाटक

एकदश



ऋषि, हिमाद्रेशुद्ध शिखरा, श्रोतभूत वाग्मती नवी ।  
 आभीरध्याः पतपुष्प, पवित्रं तज्जलं विदुः ॥  
 गोकर्णस्य च प्राचीतः पशुतेस्तरेण च ।  
 तत्र स्नात्वा हरेर्लोकं भुपस्पृश्य जलं तथा ॥  
 तपस्वा देहं नरो याति ममलोकं न संशयः ।  
 सवन्धीनां वरा पुण्या वाग्मती सर्वतो मना ॥  
 जो सवहि वचने, वराह पुराणादि जठर माहात्म्य कहलछ, से मैत्राल  
 मण्डल देहे धी(क) ॥

महा, देहे ॥

महाशेखरी गौरीप्रति

हे गौरी दहाका वैमनस्य सन देखाई छी कहने ॥

[ गौरी, वैमनस्य कहै छथी ॥ ]

॥ गौमुखि गीत ॥ वराती ॥ प्र ॥

जमा किने गमावति गोरि,  
 सकल संपति मइ ओहि अण्डहु, पावल भवत जोरि ॥  
 न घर संवर न पिठि अंवर, न मिल पैच उपारे,  
 तनय बापुर् भूरे वैशाकुल, किने मये देव अवारे ॥  
 वासुकि जीउत पवन पिउत, हरे जीउत विष खाई,  
 सेवक स्वामी बुहु मल मिलल, हुमर कओन उपाई ॥

१. य० पृ० सं०—२७; एवसं—२६ ।

२. य० पृ० सं०—२८; एवसं—२७ ।

३. 'वपाई' से 'व' अक्षर पर छिन्न अक्षर छेक ।

वाचन

अमज्जमोतिर्मल्ल कृत

पेट पटकल गाल, थोटकल, पाकल मोहिरि गोछी,  
 ताहि बुझा हाथ ओ बिहि देलहु, ते मए पापिनी घोछी ॥  
 माइ न सोचल बापे न सोचल, खोजल वैच धपने,  
 बिहिक लिखल मेडि न पावए, शासिए मनहि मने ॥  
 भने विद्यापति सुन पारवति, ओ घर त्रिभुवन देवा,  
 जगत ईसर सामि लोहि मिलु, कर जोरि कह सेवा ॥

गीतार्थ श्रवणमति ॥

महा, हे प्रिये ई हमरा साहजिके धी(क), वीनु निमित्त कोष किए करे छी ॥

१. एहि गीतक प्रसंग, भाष आ कतोक पंक्तिमें साम्य रखत विद्यापतिक एक गीत लोककण्ठमें अस्ति जकर संकलन कबीरवर चन्दासा कसने छलाह : गीत बिम्बरूपक अस्ति—

जकर नगर एते गुर शउन से कोना सुतै निचिन्ह के माई ।  
 खेती न करथि भिक्षि न मंगिथि, वालक भोजन चाहौ के माई ॥  
 नै घर अम्बर नै घर सम्बर, नै घर पैच उपार के माई ।  
 एक दिना मुख सहलो न जाइक, मालक माल उपास के माई ॥  
 कोहो आभि पथार जे देखनि, वाषक छाल ओछाय के माई ।  
 गौरी सोहाबनि जल लै गेली, फूजल बसहा खाइ के माई ॥  
 पांच सुसै शिवराजूर जेमथि, छौ बुख जेमथि बेटा के माई ।  
 सहसकसा लय वासुकि जेमथि, केओ न कहै भारि पेटा के माई ।  
 वासुकि जीवथि पवन पिबथि, बाजूर जहुर साय के माई ।  
 स्वामी हमर एहि बिधि खेपथि, हमर कोन उपाय के माई ॥  
 भगहि विद्यापति सुनु ए मनाहन, बड़ जानि सेवा करल के माई ।  
 एतक सुख दुख एतहि खेपथि, ओतक कोन उपाय के माई ॥

चन्द्रशेखर संग्रह, गीत—४९

हरगौरीविवाह नाटक

तिरपन



॥ महादेवी की गीत ॥ गुण ॥ प्र ॥

अनन्य न कर दे धनि आनन्य भन्दा  
लोभन पुगल दे मोर होखी खान ॥ १५ ॥  
न कर न कर दे धनि अपद रोसे  
कहू मानिनि दे मोर किदहु दोसे ॥ १६ ॥  
अपन कोयल दे नव पल्लव भासे  
मलिन न कर दे खरतर निभासे ॥  
विरह रहन दे रह देह कराला  
देह हुतात्मन दे धनि मालति माया ॥  
चतुरचतुर्मुख दे धन निजो रोसाये  
सुगन्धलामति दे विद्या बिना ए माने ॥ १७ ॥

गौरी, हे प्रभु मोझो फत कहव ॥

॥ गीतु की गीत ॥ राजविजय ॥ चो ॥

तपसिया तोरे लके केओ न मिखारी, पवलह राजकुमारी ॥ १५ ॥  
तपसिया मोरे मुख हेरि हसे, तोरा मुख कत रूप बसे ॥  
अश्रुट फोट मोट भन्दा, जानि आवल पुरि फन्दा ॥

१. एहि ठाम पंक्ति अन्तमे लम्बरेखामे तीन टा धिम्बु देल छेक ।

२. य० पृ० सं०—२६; एकस—४८ ।

३. रामभजन संग्रह (गीत-५)मे येह गीत "मलाल" रागमे देल अछि ।

'ध्रुव' शब्द नहि अछि । पाठान्तर्ग नहि । येह गीत ब्रह्मचर्य—चतुरचतुर्भुज  
एवं गीतसप्तदशी, गीत संख्या—१३ ।

चोथन

जगज्ज्योतिर्नैकल कृत

कूल तीरल मए आसे, सेओ भेळ वसहुक घासे ॥  
विष्णुपुत्री हेन भासे, ओहे जोषि जगत किसाने ॥ १८ ॥

[ महा ॥ हे प्रिये सुनह ॥

[ १ आसावरी ॥ चो ॥

१. य० पृ० सं०—३०; एकस ४४ ।

२. एकस—४४ पर एहि ठाम छूट चिह्न दऽ कऽ पत्रक उपरका भागमे  
लिखल अछि—महा, हे प्रिये सुनह ॥ आसावरी ॥ चो ॥ ओहे दिन-दिन  
होख खीन ॥ गीतार्थ भावयति ॥ गौरी, इहाक त्रैलोक्य अधीन,  
किछु विद्यापति मोरी ॥ ॥ कानरा ॥ पुरि ॥ द्विज जुवती हर' ।  
एकस—१२क पर पाँच पंक्तिमे एकटा गीत सम्पन्न कऽ छठम पंक्तिमे  
'॥ आसावरी ॥ चो ॥' दऽ ओहे दिने दिने होख जिने'सँ एकटा गीत  
कारण होइछ जे एकस—१२ क पर छठम पंक्तिमे मध्यमे सम्पन्न होइछ ।  
एकस—१२क पर रागोल्लेखक पञ्चात् तथा प्रस्तुत गीतक आरम्भमे  
पढ़िने छूट चिह्न दऽ पत्रक नीचाँमे छेक पंक्ति कनकलता अरविदा' ।  
॥ कन—१२क पर छठम पंक्तिमे ॥ कानरा ॥ प ॥' दऽ 'द्विजजुवती हर'  
सँ गीत आरम्भ होइछ । किन्तु एहिठाम डेड पंक्तिमे गीतक चारि चरण  
भाव अछि । एह गीतमे 'द्विज' शब्द पर छूट चिह्न दऽ कऽ अशोभायमे  
लिखल अछि निम्नलिखित चन्दनमिन्दु किरण ॥' य० पृ० सं०—३०; एकस—  
४४ पर संकेतित एवं एकस—१२ क पर पल्लवित अंगके' य० पृ० सं०  
—३० मे अन्तर्भूत कयल गेल अछि ।

३. य० पृ० सं०—३०; एकस—४४ खमे अन्तर्भूत एकस—१२क केर अन्तिम  
बुद्ध पंक्ति ।

हरगौरीविवाह नाटक

पञ्चम



(आस्तावरी ॥ चौ ॥ ?)

ओहे दिने दिने होअ खिने, कबहु न भोअए फलझू मल्लिने,  
पुर भेले गरतिअ तमे, हरि न होअ तुअ आनम समे ॥  
पुरइ मनोरुप गोरी, सर ॥]

१. ई पवित्र कोनो स्वतन्त्र गीतक सङ्केत लभैत अछि । कारण आमाँ के गीत अछि तकरा सङ्ग एकर सङ्गति बेसैत नहि अछि । सम्भव अछि एहि गीतक पूर्णरूप कोनो स्वतन्त्र पत्रमे होल गेल हो आ ओ पत्र वर्तमान हस्तलेखसँ विच्छिन्न भऽ कऽ हेरा गेल हो । रामचरित्मानसी (पृ० ७६-७७)मे 'योगिनी आस्तावरी' रागक उदाहरणमे 'कविरतनाजी'क एकटा गीत अछि जकर आरम्भ 'कनकलता अरविन्दा'सँ होइछ । एहि गीतमे नाविकाक रूपक सह विछक्षण वर्णन भेल अछि । वर्तमान प्रसङ्गमे महादेवी गोरीक कृपातिशयताक वर्णन कयलनि अछि । अतः 'कविरतनाजी'क छल्लिछल्ल गीत एहि ठामक हेतु पूर्ण उपयुक्त अछि । 'कविरतनाजी' ओ 'कविरतन'के अश्विन मानल जाइत छनि । कविरतनक अखनारीश्वर वर्णनात्मक गीत एहि नाटकमे पूर्वं प्रयुक्त भेल देखल गेल अछि । अतः नाटककार द्वारा कवि रतन (रतनाजी)क दोसरो गीतक प्रयोग करबामे कोनो असङ्गति नहि लभैत । कविरतनाजीक ई पवित्र गीत निम्न रूपक अछि—

कनकलता अरविन्दा मजनाँ मजिरि छपि गेल चन्दा ॥  
केओ बोल समय समरा केओ बोल-नहि नहि बलब चकोरा ॥  
केओ बोल सँबल्ले देवला केओ बोल नहि नहि नोब मिलला ॥  
सँसए पह जन नही (केओ) बोल तोर मुस सम नहीं ॥  
कवि रतनाजी भाने सङ्ग कलझू दुअयो असमाने ॥  
मिलु रति मदन समाना देवल देवी लखनचन्द राजा ॥

अनहि बस' ए अहनीसे, धुण कर लोभे किरए वह दोसे,  
ओहि नहि समसय बाणे, हरि नहि सोहर नयन समाने ॥  
एकहि करए कहु रावे, मदन बेसापि सबहि मन तावे,  
कि कहय सोहिहि सखानी, हरि तह गहि होअ तुम सम याणी ॥  
बाव अमल ओहि बाहे, नागर जन ओहि नहि अवगाहे,  
करे न सरए ताहि कोइ, हरि नहि कामिनि कुष सम होई ॥  
चान्द हरिण बिक मिरि, तुअ ठनु जीतल चाहुक मिरि,  
नृपजगज्योतिमल भाने, सबहिक शङ्कर कर समधाने ॥१॥ ]]

गीतार्थ आशयति ॥

गोरी, इहाक बँलोक्य अधीन किछु विशति मोरी ॥१॥ ]

[ [ ॥१॥कावरा ॥ प ॥ ]

[ निवृत्ति जगदमिन्दु किरण ॥१॥ ]

द्विज युवती हर गोपि कपटे घर, अनेक जाति कुल मूढे,  
त्रिभुवन माथ, भूतगण साथ, न हरि हरि तुअ वूढे ॥१॥ ]]

महा, हे पावैति [ इहाक आनन्दे ]\* [ एहिनी ठाँव ] मोरी नृत्य करएक मन  
होइछ ॥

१. एवम्—१२ छ केर साढ़े पाँच पङ्क्ति ।

२. एकरा पश्चात् कोनो अङ्क दऽ दू पासी बेल छेक ।

३. ई वाक्य एवम्—४ छ केर ऊर्ध्वभागमे अछि जकर उत्तरेख पूर्व भेल अछि ।

४. एवम्—१२ छ केर ओइ पङ्क्ति ।

५. ई चरण अत्र उद्धृत गीत शोक वा स्वतन्त्र गीतक प्रथम पङ्क्ति-सङ्केत ।

६. ई गीत एतबेटा अछि वा अपूर्ण से शङ्का कयल जा सकैछ ।

७. एहि ठाम ( ) एहन छूट चिल्ल बेल छेक आ तकरो बीचमे छूट चिन्ह बेल छेक । एवम्—४ छ केर ऊर्ध्व भागमे पूर्वोद्धृत छूटल पङ्क्तिकसँ ऊपर लिखल छेक 'इहाक आनन्दे' तथा छूट चिल्ल वाला पङ्क्तिक लोभे पत्रक बहिन भागमे तिरछा कऽ सूडम अक्षरमे लिखल छेक 'एहिनी ठाँव' ।



॥ महादेव नृत्यगीतं ॥ ध्यात्री ॥ ए ॥

भोरी भरमे अमिए वम चरदा बाघ जिविए रे बसह कर दग्दा ॥  
कञ्जोने परि होएत नाट निरझाहे, परम वैआकुल विमुचन नाहे ॥ ध्रुवं ॥  
क्षिरे सुरसरि भरे गेलि बडिबाई, नयन हुताशन परते गिझाई ॥  
समरि ससल फणि दिसे दिसे धुरे, तल्लिके ऊपरे घस कातिक मधुरे ॥  
मुकमिसदानन्द निसे कर सेवा, देव अमय वर संकर देवा ॥

गोरी हे खूबीद्वर, ईश्वर नृत्य देखि, हमराहु नाचएक मन' [ (उत्साह) ]  
होइछा ।

अवि हे पार्श्वेति, जोहाओ ईश्वरक अ'छे' सरीरक उचित ॥

॥ गौधुक्ति गीतं ॥ मेघमल्लाल ॥ अ ॥

धान मृदङ्ग, तान ताल रव, यूँ उघट ताहा देखि,  
ईसर सधुत, मण्डल नाचत, किमरि इ सुख लेई ॥  
पेडि छि तकडि छि, देडि छि तकडि छि, टकनकता ॥  
हर नाचए र तत थेश र तत थेश ॥ ध्रु ॥  
नाच सकल आन एक ईसर, भुजि जन मुखक निवाय,  
दुखि जन दुख हर देख परमवय, सब मन हो परगास ॥

थेटक

[ न कथे एता, ताः टकनक ताता, साच गावे व गावेइता ॥

हरना ॥

एहि बजार संसार सार एक शिव पद पंजर जोर,  
महिपति अगजोति मनए भगति नित एहि अनु केओ होअ भोर ॥

पेडिडि फनि घेघेना, टपेडिडि फनि टपेना

टपेना टपेना वे गर्भे शक्ति ॥ ]

२. 'नाचएक मन' एहि दु शब्दके ऊपरमे हुनु फातसं अम्बरेश्वरले घेरि ओही सोझा पत्रक अधोभागमे संकल्पिक पाठ 'उत्साह' बेस अछि ।

३. म० पृ० सं०—३१; एवस०—५ क ।

३. एहि गीतक मृदङ्गक बोलबला अंस उबकल आ लेपावलसन रहने पदनामे अत्यन्त कष्टकर अछि ।

अठान

जगज्ज्योतिर्मल्ल कुल

अना हे जिये, साधु साधु, हमरा परिश्रम बड भेल, अतएव जन  
एक जुआ खेयाहु ॥

गोरी ईश्वर सर्वथा ॥

॥ मालव ॥ अए ॥

शशधर डमक बसह बघछाला, राग पिणाक बलए जवमाला ॥  
जत जत बौतवे आइल आनी, सबहि दे/रि सवे जिनल भवानी ॥ ध्रुवं ॥  
आइल सरवस सवे देल सारी, पुनु [पुनु] जोइल छुलि अचारी ॥  
आघ शरीर हरल हरे हारी, सेहओ जिनल गिरिराज कुमारी ॥  
तजन छजाए रहल शिरनाई, हर अलिगल हरषि गनारी ॥  
जुगुत जुआरी गोविन्द मासा, गोरि सहित हर पुरखय आसा ॥

महादेवश्रीवं कृत्वा, तमैव कोणास्तरे तिष्ठति ॥

अवि हे पार्श्वेति महादेव मनोदुखे बैसल छवि गए मनावह ॥  
गोरी हे खूबीद्वर पुनु ॥

॥ गौधुक्ति गीतं ॥ आसं ॥ अति ॥

अमि अमि पुछि गोरि देह उपदेश, माइहे,

कि देव अनाउव रसर महेसे ॥

आठ तुरैया सेज हुनि न सोहाबए, अतहु आतनु बाघ छाल ओछाबए ॥  
ओर फ'पुर धान हुनि न सोहाब, आतनु छुतुर फुल तखि मल भावे ॥  
विष्णुपुरी कहै, हित उपदेश, हाय काँछेन बाघ बूढ महेसे ॥

॥ गीतार्थ आवयति ॥

अवि हे पार्श्वेति, शिवक चरित बुसँते कठिन बी(क), मोझे कहै  
छओ, अवधान कर ॥

श्रुधुक्ति गीतं ॥ मालव ॥ चो ॥

जारि कुसुम धनु, भरमे धवल धनु, अनुखन भोजन भागे,  
शिर गनि लो ॥

१. म० पृ० सं०—३२; एवस०—५ क ।

२. 'छुटिअ धारी' एहनो पदकवि संभव अछि ।

३. म० पृ० सं०—३३; एवस०—५ क ।

हरणी विविवाह नाटक

अनसठि



कओने गुने हिमगिरि<sup>१</sup> राजकुमारी<sup>२</sup> पुन नारी लो ॥ ध्रुव ॥  
सहज दिगम्बर<sup>३</sup> बूढ़ बलह पर<sup>४</sup> भुषण बाधेरि छाला<sup>५</sup>  
रुदमाला लो ॥

भुत सेवक साथे<sup>६</sup> खडग इमरु हाथे<sup>७</sup> सवे खन सुतथि मशाने<sup>८</sup>  
विषपाने लो ॥

जगदिश बोल सुन<sup>९</sup> गोरिक बड पुन<sup>१०</sup> देवदूक देव जेसा<sup>११</sup>  
पुर आशा लो ॥

गीतार्थ भाव<sup>१२</sup> मति ॥

अपन एहन रूप<sup>१३</sup> जानका महादेवहि<sup>१४</sup> प्रसादे सबे सिद्धि ॥  
गौरी<sup>१५</sup> हे ऋषीश्वर जोहाओ किछु ईश्वरक बाधि मुल जने छी ॥

गोप्युक्ति गीत ॥ गौडामालव ॥ ३ ॥

बधि	बिकट	बटा	सधिहु	चाबिरो	कोटा ॥
कन	जुग	सहस	वपस	बहि	मेला ॥
उमत	महादेव	समत	न		भिला ॥
मोछि	मेलम	छार	सहज	न	तेज पार ॥
नाम	बमदेशी	हुडे	न	हुडअ	केओ ॥
कवि	विद्यापति	गाऊ	जीअओ	शिवसिंह	राऊ ॥ <sup>१</sup>

[ऋषि, से इहे पए जानियो त्वराए ईश्वर मनाओ आहु ॥  
गौरी, मओ काइ छओ ] ॥

ततो गौरी ईश्वर हस्ते गृहीत्वा हयानभासयति ॥

गौरी<sup>१६</sup> हे ईश्वर हम सजो किए रस छी<sup>१७</sup> हम नैहर पठैअहु ॥

१. एहि ठाम (१) एहि प्रकारक चिह्न छेक ।

२. य० पृ० सं०—३४; एवस०—६ ख ।

३. रागतरङ्गिणी (पृ०—१०७) मे गौडामालवक गौडीय प्रभेदक उवाहरणमे ई गीत देल गेल अछि । पाठांतर—बाधए । तधिहु<sup>१</sup> चदिन । तेजए । चारिम पंक्तिक अभाव । सुकवि । जिवओ । सिवसिंह ।

छाडि

जगन्मोतिमंदल कुत

॥ महादेवोक्ति गीत ॥ पद्विधा ॥ ४९ ॥

हसलि भवानी न मानए शोध<sup>१</sup> आजे अगह गोरि मोरे<sup>२</sup> अनुरो(?)<sup>३</sup> ध ॥  
जत किछु मग तोह अछए भजार<sup>४</sup> पहिलहि देव विम कणि मणिआर ॥  
भूखला<sup>५</sup> नाग देअओ विषे सानि<sup>६</sup> पडअक बसहा देवउ पलानि ॥  
अहन विद्यापति पुनु पुनु सेव<sup>७</sup> बदलदेविपति बंछनाम देव ॥  
ऋषि<sup>८</sup> हे महादेव मोर विछाति मुनु ॥

ऋष्युक्ति गीत ॥ मालव ॥ खज ॥

हर हे छेवए सएलहु सुख लागी<sup>१</sup> विषम नयन अनुजन वर आगी ॥  
बसह पराएल<sup>२</sup> आने पति पताल रहब गए नागे ॥  
हसि उठि चलल अकाशे<sup>३</sup> गोरि चलल गिरिराजक पाशे ॥  
अचित कहए नहि आई<sup>४</sup> उमत बराधव कओने उपाई ॥  
विद्यापति कवि सेवा<sup>५</sup> देव अमय वर छंकर देवा ॥<sup>६</sup>

ऋषि<sup>७</sup> हे पार्वती तोहे ईश्वरक अठंघरीर<sup>८</sup> तहि सिने कोप नहु उचित ॥

गौरी<sup>९</sup> हे ऋषीश्वर एवमेव ॥

गौरी<sup>१०</sup> उतथाय महादेव समीप एवा प्रणम ॥

मोरा किछु गोचर भेलछ<sup>११</sup> ते गोचर करे छओ अवधान कछ ॥

१. य० पृ० सं०—३५; एवस—७ क ।

२. एहि ठाम 'भूखलह' शब्द लीखि ऊपरमे चाछ अक्षर पर हु-हु २१ लम्बरेखा देल अछि जे चाक अक्षरके काटि देवाक हेतु प्रयुक्त भेल अछि ।

३. ई गीत मिथिलाक कोनो प्राचीन स्रोतसँ नगैरनाथगुप्त सेहो प्राप्त कयमे छलाह या हरगौरीपदावली (गीत—३०) शीर्षकमे प्रकाशित कयलनि । मिश्र-कजुबधर (गीत—७१९) मिथिलामे लोकमुखत संगृहीत 'हरगौरी और गङ्गा विषयक पद' शीर्षकमे रखलनि । पाठान्तर—शिव हे । अछलाहु<sup>१</sup> । विषम । अमुखने । बसहा पडएल । नुकायल नागे । सति । अकाशे । अछलि । दासे । सोलए नहि आई । उमत भुआओव कओने उपाई । अनह विद्यापति दासे । गौरी तंकर पुराबय आसे ।

४. य० पृ० सं०—३६; एवस०—७ख

हरगौरीविवाह नाटक

एवसति



॥ गौरी महादेवयोर्दण्डक गीत ॥ मिश्रद्वय ॥ प्र ॥

भक्तस खल हीन तब मुख धुनिअ, मन्त्रा हीन मुख तनु, हरहे,  
नील रतन तम सामर सुन्दर, जारल कुसुम अतु, गोरि हे ॥  
भुजग मुपग मुख दुपल सधे धेअ, किए वण्ड दिनमणि भाधे, हरहे,  
विमल कमल सम मुख मुख मंडल, दरसन होओ ते आसे, गोरि हे ॥  
अनल काँच रवि विपन विलोचन, ई किए अदबुद रूपे, हरहे,  
विकर लागि कएल नीनि विलोचन, गुन रूप समिध तलने, गोरि हे ॥  
भुव वेलाळ ताक रने वाचिअ, वाचिअ धरे धरे भीखि, हरहे,  
आन केओ जनु अमर सख दुख, तोहे एक कुअरु विदेशी, गोरि हे ॥  
गुणजगजोति कह काहि न सोहए, गिरिजा गिरिधर विलासे, हरहे ॥  
प्रणमि प्रणमि ओहे पुनुपुनु विनमए, दुर कर कबुन तरासे ॥ २

[महा, हे प्राणप्रिये मोहु किछु कहै छि ॥]

[ ] ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१. य० पु० सं०—३७; एकल—क क ।

२. गीतक अन्तमे छुट चिह्न ४३ का पक्षक ऊपरमे लिखल अछि, 'महा' हे प्राण प्रिये, मोहु किछु कहै छि ॥ विधान ॥ ॥ ॥

गिरिवर नन्दिनि ॥ अभिसारिणि हे मा ॥

एकल—१११ पर एउटा सम्पूर्ण गीत अछि जे गिरिवरनन्दिनि हर हिय हारिनिधे प्रारम्भ होइत अछि । ओ गीत वर्तमान स्थापक श्रीक विष्णु प्रतिलिपि कालमे छुटि जवनाक कारण स्वतन्त्र पत्रमे लिखल गेल अछि । 'अभिसारिणि हे' मे प्रारम्भ होमजवा गीत स्वतन्त्र पत्रमे कहाहु कहि केईछ ।

३. 'मोराहु' कीजि 'रा' पर तीन गीत सम्बन्धका वर ओकरा कटवाक संकेत अछि ।

४. एकल—११ का पर 'एक' अंक सन एक विशेष प्रकाशक चिह्न ४३ का गीत प्रारम्भ गेल अछि । ओ समस्त गीत य० पु० सं०—३७; एकल—क क मे अन्तर्भूत का देल गेल अछि । एकल—क क पर छुट चिह्नके मा ॥ विधान ॥ देल अछि किछु एउटा 'मि नि न' अछि जे राग विष्णुना का मिश्रद्वयकैत थीक । रागमे ई अक्षर किछु ?

अपराध

जगज्ज्योतिर्मल कृत

गिरिवर नन्दिनी हर हिय हारिनि, मधुमय रूप अवूने ॥  
विभिन्न विलोचने सध दुल मोचन, के जग तोहर तलने ॥  
तुअ मुख अक्षर सब दिन रह पुर, मोर सिर बह मध धन्दा,  
तकल अलमय गुणगण आलय, तोहे तह हीन अन्तवा ॥  
तोहे वर नागरि नथ तह आपरि, तोहे छाडि के मोरा जाने,  
जनमे जनमे हमे अनेक लपस कए, पओलाह तोहहि किआने ॥  
तोहर परिलि पुनि मुमह सुलोचनि, पाटि देल तनु आवे,  
तोहर चरित सब कहि न होय आवे, पुरल मनोरथ सबे छ  
सबहि जुगुति मति हरक चरण गति, मद्धिमति जगजोति भावे,  
दुर कएल भय नेह मोहि शरण देह, तोह तेजि गति नहि जाने ॥ ]

कवि हे ईश्वर, जोहा दुनु व्यक्तिक सामरस्य देखि हमरा बड आनन्द मिलछ, अतएव सान्ति रस गर्वछी ।

॥ गौरी कृष्णुक्ति गीत ॥ आसावरी ॥ चो ॥

कैसे सतरथ मखतीरे, परलहु भीर गेभीरे ॥  
हे शिव शिव सर ॥  
अरण कइल तुअ जानी, राखहु ईश भवानी ॥  
करम धरम रूप हीना, भेलहु पाप अधीना ॥  
तोहे विभुवन पति भाये, हम निरखैस अनादे ॥  
करण महेश कह एके, अबे सब सोहर बिबेके ॥

१. य० पु० सं०—३७; एकल—क क ।

२. एहि गीतक भाव तथा कुछ गीत मंथि विद्यापतिक नाम पर चलैत गीतमे भेटैत अछि । संभव अछि जे कारण महेशक प्रस्तुत गीतके 'तोहि-मोहि' का विद्यापतिक नाम पर जला देल गेल हो । गीत निम्नरूपक अछि—

तोहि प्रभु विभुवन नाथे । हे हर हम निरदीत अनाथे ॥  
करम धरम रूप हीने । पड़लहु पाप अधीने ॥  
बेड भासल भास धारे । भैरव चर कछधारे ॥  
सानर तम मुख भारे । अबहु करिअ प्रतिकारे ॥  
भनहि विद्यापति भावे । संकट करिअ तरावे ॥

—नरेशनाथगुप्त (हरगौरी पदावली, गीत-४२), मि० म०, गीत-७७५ ।

हरगौरीविवाह नाटक

लिखछी



अधि हे सप्तजन नाटक नामा प्रकारक नचे छओ ताहो ।  
थीनी जगज्ज्योतिर्मल महाराजक अनुमत हुइ श्लोक कहै छओ ॥

श्लोक ॥

नेपाह्लादकरनु किञ्चिदपर श्रोत्रप्रसाधार्थकं  
चित्ते सप्तनुते प्रमोदमितरन्दन्यद्विपादापहं ॥  
नारीप्रीतिकरं किमप्य तरुणस्वैक शिशोष्प्रीतिधं  
पूर्णं मन्दरमैर्दन्ति विद्युत्सस्त्रेवं विषं माटकं ॥  
द्रव्यं केचन नाथपश्यनुदिनं यम्म परे स्वीप्सितं  
मोक्षं केचि न नाट्यमीतिविधिना नानाविधं कामितं ॥  
एवं सर्व्वमनर्थकस्तु मनुते भूमीपति श्रीजगत् ज्यो-  
तिर्मलशिवशिवनयमधुषो हीष्टाण्यं सार्थकं ॥

॥ गीतमपरञ्च ॥ केशरा ॥ खलं ॥

अओर राह निरवाह नाही शरण राखइ ईस  
चाँच चन्दन विभुति भूषण भाग भोजन सीस ॥  
काय कुण्डल करहि कङ्कण बल्य हार फणीस  
भूत राज मरुत मन्दिर केलि कर अहनीस ॥  
हस्तमाळ जटा विराजित सधलि देव अवीस  
अगम रूप सरूपे शङ्कर अओर कओत करीत ॥  
परिहास वास उवास नास अरु वन्दओ सीस ॥१

॥ सर्व्व उल्थाय श्लोकं पठन्ति ॥

तदेकमल्लिभावनावशाच्चकार नाटकं  
य एतदुत्तमं ललितमं तदस्य भूपतेः  
अशेष देव दैवतं समस्त लोक सेवितः  
शिवः शिवानि मङ्गला तनोतु मङ्गलानि सा ॥

१. य० पृ० सं०-३९; एफ०-६६ ।

२. गीत-संग्रह, गीत-२३ । पाठांतर-तरण । भोजन । सर्वहि । रूप ।  
कओत । अओ । निरविस ।

३. य० पृ० सं०-४; एफ०-६६ ।

धोसठि

जगज्ज्योतिर्मल कृत

॥ तत्प्रकारं गीतं ॥ मालव ॥ १॥

सात उपर कत साठहि मुनू समत नेपाल एहि विधि जानू ॥  
जेठ कुट्ट विधि मुख गराय तुलावान मख कएल उतास ॥  
कत उपचार मंगल धुनि बाज मंगल नगर अहु मुजन समाज ॥  
नृपजगज्ज्योति देखि भव भीति करम कएल जत चण्डि पिरैति ॥  
सुख वि तंशमणि मंगल माळ नृपजगज्ज्योतिमल होथु चिराऊ ॥

॥ हे वृन्द सतपर श्रीपशुपतिका स्तुति किछु करै छओ ॥

प्रथम प्रणमओ देव गणपति अओ सदान संजुतं ॥  
बाल बाल विनाल अशधर लोभन जय गोभितं ॥  
असुर किन्नर नाग नर वर सकल सेवित उपम्वकं ॥  
वास विहित समाधि सङ्गत योगि जन मणिपूरकं ॥  
बम्बु कुम्ब समान तनु दधि विहित पाटिक पर्व्वतं ॥  
त्रिपुर हर मति वुष्ट दानव दम्प खण्डन गन्धितं ॥  
हिर मन्दाकिनि हाड किङ्किणि खाल हार विराजितं ॥  
सकटादि मुनिवर वृन्द बन्धित जातवादि सभाशितं ॥  
विषम मोह ममय परिहरि निषय वसधि मसान ॥  
देवि रङ्गहि राख पदवी एहन के प्रभु जान ॥  
कर वराभय उमर धूलहि शिवक रूप अनूपमं ॥  
अडं अङ्गहि मङ्गला घरि तिनिहु भुवन अनुत्तमं ॥  
हर पाद पञ्चुल निहित मानस नृपतिजगज्ज्योति भावितं ॥  
माव यत्वधराशि दारक भूति विधि मनारतं ॥

१. रागभजनसंग्रह, गीत-३९ । पाठांतर-सातसात वंजुजगलकपाय समत  
नेपाल द्विजवरहि मिलाव । कुट्ट । मख । जगज्ज्योतिमल ।

२. य० पृ० सं०-४१; एफ०-१०६ ।

३. एहि ठाम लम्ब रूपमे तीन विन्दु देल छैक ।

४. य० पृ० सं०-४२; एफ०-१०६ ।

हरमोरीविवाह नाटक

पंचति



[ ॥ सर्वे उत्तम्य कुराग प्रायश्चित्त गीतं गायन्ति ॥

हे वृन्द, नृत्य राग वेला निमग्न मही, ते कुरागओ गायिन्, ताहि  
पापक प्रायश्चित्तार्थ भैरवी रागे, हरिहर स्वरूप गवै छी ॥

भैरवी ॥ चो ॥

गगन गगन ॥

( ॥ भैरवी ॥ प्र ॥

गगन गगन सम, जलधि जलधि सम, ताहि उपमा नहि जानै,  
जे हर से हरि, जे हरि से हर, एक ओहे रहि निवाने ॥  
एक कर तिरमूल, एक कर सारंग, एक कर डमरु बजावे,  
एक कर पञ्चज, हरि ए एक भए, बुद्ध सनु लोक देखावे ॥  
अहिने वर दिख, जाने भवम दिख, बुद्ध ओहे मङ्गल रूपे,  
ओ कनकावति, ओ गिरिजावति, के हुत हुनक सखे ॥  
शिव शिव दापक, हरि शुभदायक, एहे बुद्ध एक पराणे,  
मोह मगन जन संकट जल, होध, ओहे ताहि करम तराणे ॥  
सुकवि वंशमणि, नृप जगजोति, बुद्ध, हरि अङ्कुर गुण गाई,  
कुराग नाम अवस, होध पातक, भैरवि सह दुर जाई ॥

१. ई गीत वर्तमान हस्तलेखक कोनो अतिरिक्त पत्रमे कतहु उपलब्ध नहि  
अछि । किन्तु धिक ई वंशमणि कविक हरिहर-स्वरूप-वर्णनात्मक गीतक  
आरम्भिक अंश । एहि गीतक पूर्ण रूप नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे  
रक्षित 'राग-मञ्जन-संग्रह' (गीत—१०) नामक हस्तलिखित ग्रन्थमे भेटैछ ।  
ओहिठाम सेहो ई गीत भैरवी रागहिमे देल गेल अछि । अन्तिम छेद पंक्ति  
छण्डित छैक । अन्तिममे कवि ओ हुनक पोषकक नाम मङ्गल अछि । किन्तु  
'नाता' राग, (क्रमिक-प्रथम ३३८) गीत—३९ मे ई गीत पूर्ण अछि । गीत  
पूर्वकवमे ओतहिसे देल गेल अछि ।

अनन्तशेषमाक प्रयोगक हेतु बाल्मीकीय रामायणक उचितसं तुलनीय—

गगन गगनाकारं सागर सागरोपमं ।

रामरावणयोर्द्वंद्वं रामरावणयोरिव ॥

छेआठठि

जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत

॥ हे वृन्द, तवन्तर कहरा गायो ॥

कहरा ॥ सारङ्गी ॥ चो ॥

वदन धन्य मोर हर गुण कहिए, धन्य धन्य सेहे गुनिए रे ॥  
कर जुग धन्य कैए तनु अभिनय, नयन धन्य सेहे देखिए रे ॥  
वरण धन्य हर प्रगति करिए जे, दुरित दुख दुर जैह्यो रे ॥  
योग जतने जाहि जोगि त पावए, बलि आवे अविरहेहि वैह्यो रे ॥  
पतङ्ग न चिह्नि पावक जानि परिहए, तैसन विषय रस प्रसिहए रे ॥  
भ्रमय पराभव देखि देखि जइमति, पाछे पुनु पेशीहए रे ॥  
अगति भाव महिमा के जानए, जे नहि एहि सोहावए रे ॥  
नकोर चाँद जनि अविरल खेवए, नृपजगजो/तिमल गावए रे ॥

[ नृपतिः परिमातु पूर्णकामः, पृथिवी, सन्तु निरामयारथ लोकाः ॥  
अथ वर्षतु वासवः स्वकाले, परमानन्दमयोपमस्तु देशः ॥ ]

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्मल्ल कृतं  
अंचपंचाशद्व गीतोपचरं हरगौरीविवाह नाम नाटकं समाप्तं ॥

श्रीमन्मानीमंकरी प्रीणीतः ॥

॥ सम्पत् ४७६ ज्येष्ठ कृष्ण अमावास्या सूर्यप्रासत  
श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्मल्लदेवप्रभु ठाकुर सन तुलादानस,  
३३ हरगौरी विवाह व्याख्यान दयका जुरी ॥

॥ शुभानि भवन्तु ॥

१. पृ० पृ० सं०—४३; पृष्ठ—११८ ।

हरगौरीविवाह नाटक

सप्तमठि



# हरगौरीविवाह नाटक

शब्दार्थ — संग्रह

अचिरेहि-शीघ्र. अजगुल-आश्चर्य-जनक. अइवुद-अव्युत. अतवाह-अनवति.  
अपद-अकारण. अमिअ(ए)-अमृत. अजिव-अजीवन करण. कामोद-सुगन्धिमे.  
इहाका-अहोके. उगारव-उद्यतन लगायव. उत्पति-ओरिआमले. उमत्-उमत्त.  
ऊन-अल्प. अजोनवो-अनहु. कजोगे-के, कोन. कजने परि-कोन प्रकारे. कहिति-  
केहनि. काइ-किएक. काछए-वेश अनवप. कांति-कान्ति, शोभा. कृपाओ-कृपासो.  
कौलि छिअधि-कयले छधि. कोह-कोध. सोमह-कमा कक. मरसिअ-मोहछ.  
गिम-भीवा, फंड. गुरुविनि-मर्मवशी. गोअ-नुकवैछ. गोइ-नुकाव. गोचर-भिवेदन.  
गोह-नुकवैत छधि. वक्षु-रुप-आधि परकव. परम-पार, नाथ.  
चादेरी फोटा-बन्दमाक टोप. बिदपल-परिधित. छलो-छो. जमनोपट्ट-पर्वी.  
जीवज-जीतल. जीनि-जीति. जुडाओन-शीतलकारक. जोर-गुगल. साधव-चित्ता  
करव. ओहा-अहाँ. टाह-गहना विशेष. ठमा-ठाम. तराए-तुरत.  
तभीहि-ताहिमे, ततऽ. तरअर-तरअर. सावे-उपत करैछ. सुले-समान. थिर-स्थिर.  
थोवहि-थोपने छधि. वहुदीय-दसो दिशा. धुतर-मलिन. धोछी-मिलोधि.  
जासिकबुछि-पयुबुछि. निओ-निज. निदाने-उपाय. निरदीस-निरुपाय.  
प्रणवि-प्रणाम तऽ. पटकल-पचकल. पठओलाह-पठौलनि. पठओवाह-पठयवनि.  
परतने-प्रसन्न. पताहनि-शुभार. पुने-पुण्यतऽ. फाटिक-स्फटिकक. फोटगोट-नमहर टोप.  
आज-नाथ. वम-वमग करैछ. वलए-वलया. वाघेरि-वाघक. वासु-वासिध, दहसु.  
वीस-बिष. वेआजे-लाथे. वेआधि-आधि, रोग. वेआदित-आप्त. केटिआ-  
बेटो, पुत्री. बोलसुहर-बोल मधुर. भगति-भक्ति. भुखला-भूखलमे. भोजन-  
भोजन. भौहेरि गोछी-भौहक गुच्छा. मणिआर-मणिमुक्त शर्व. मथा-माथ पर.  
मराथिनि-मनाइनि. मन्दार-अकोन. मैओ-हुम. मोओ-हुम. माकना-माथना.  
मावे-माथना करैछ. राज-राजा. रावे-वर्जछ. सखेरि-सखक. सख-दश.  
लोह-लोभ. सिरी-श्री, शोभा. सजो-सो. सतरव-पार होयव. समनुत-संयुक्त.  
समनुल. सरीस-सदृश. सवर-सबल. साहजिके-स्वभाविके. सीर-शिर.  
सोह-सोभैछ. होमाओ पार-सऽ सकैछ. हिअ-हृदय.

परिशिष्ट

लगज्ज्योतिर्मलक

## कुञ्जविहार नाटक

लगज्ज्योतिर्मलक 'कुञ्जविहार नाटक' विशेष रूपसँ चर्चित रहल अछि । किन्तु ई पूर्वकयमे मुघी समाजक बंधन प्रत्युत रहि भऽ सकल अछि । एहन सूचना देल जाइत रहल अछि जे पी० सी० बागची महोदय 'परिचय' नामक ग्रंथमा सांस्कृतिक पत्रमे प्रकाशित करीने छलाह । परन्तु ओ ककरहु दृष्टि पर नहि आवि सकल । कतहु कतहु एकर समीक्षा कयलो गेल तँ ओकरा कोनो स्थितिमे पूर्ण नहि कहल जा सकैछ । कामेश्वर सिंह वरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक एजिका 'मनीषा'क १९७६क द्वितीय अंकमे हमरा द्वारा संपादित भऽ हिन्दी भूमिकाक संग प्रकाशित भेल परन्तु ओही विद्वान् द्वारा अनदेख रहि गेल ।

'कुञ्जविहार नाटक'क मूलप्रति काठमाण्डूक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि जे एहि नाटकक एक मात्र उपलब्ध प्रति थिक । ई तालपत्र पर तैवारी लिपिके लिखित अछि । तालपत्रक आकार १२.१/२" × २.१/२" छैक । प्रति पृष्ठ पक्षिक संख्या पाँच ओ पत्रक संख्या बारह छैक । एहि नाटकमे गीतमात्र अछि अकर संख्या चौतिस अछि । तालपत्रक अन्तमे गीत संभक प्रथम चरणक पञ्चिका देल गेल अछि । रचनाकालक कोनो सूचना नहि अछि ।

सर्वप्रथम एकर नामे बथुछ देल जाइत रहल अछि—कुञ्जविहारी नाटक । मूल प्रतिक आदि ओ अन्तमे क्रमशः लिखित अछि—'श्रीकुञ्जविहार नाम नाटक' 'विरचिते' तथा 'इति कुञ्जविहार नाम नाटकं सम्पूर्णम्' । अतः एहि नाटकक शुद्ध नाम थिक 'कुञ्जविहार नाटक' ।

एहि नाटकमे जे चौतिस गोट गीत अछि तकर तुलना गीत पञ्चिकाक प्रथम चरण-सूचीसँ कयला उत्तर पता चर्तैत अछि जे कयसँ कम तेरह गोट गीत एहन अछि अकर प्रथम चरण गीत-पञ्चिकाक सूचीसँ भिन्न अछि । निम्नलिखित शालिकासँ ई स्पष्ट होयत—

गीत-क्रमांक	उपलब्ध गीतक प्रथम चरण	गीत-पञ्चिकाक प्रथम चरणसँ
३.	कुञ्जविहार हरिछाज	— दखिन पवन
४.	जाहि वह अमुना तीर	— देख सनि
५.	सखि बाज	— अवम पथम
७.	असह बैसन सहि न जाए	— सुघ गुधाक



८.	कुल बहु नारि का लाज	—	नयन शोभ
१०.	छत एक हमहुं जाएव	—	नृपतिशिव
१३.	बूवरि बूवरि विरह येआकुल	—	आल सुनैते
१४.	जाएव भवुरि पुरि	—	हेन पिपा
१६.	कामुक चरण भेटि आज	—	जाइते अमुया
१८.	अकामिक विहि मोर बेल	—	तजु रि मामिनि
२०.	आज देखलि मोर राधा	—	चलत हमे
२६.	आह्वान अनिया आओर कत	—	हुर नद
२८.	परितत बेल मोर भाग	—	भल न देख

एहि अन्तरक आख्या कठिन अछि । जगज्ज्योतिर्मल्लक गीतक जे सरह भेटल अछि ताहिमे हुनक नाटकक गीत सब सम्मिलित अछि अथवा एक संग्रहक गीत दोसरहु संग्रहमे भेटैत अछि । परन्तु कोनहु संग्रहमे ऊपर परिभाषित गीत नहि भेटैत अछि, संगहि गीतपञ्चकामे बेल चरणसँ आरम्भ गीत सेहो नहि भेटैत अछि । कुञ्जविहार नाटकक पहिल गीतमे गीत संख्या—३, १०, १४, १६ ओ २० दुइ-दुइ चरण मात्रक अछि । स्पष्टे, ई अपूर्ण गीत छि, कारण एकर प्रसंगानुकूल भाव सेहो पूर्ण स्पष्ट नहि छैक । शेष आठ गोट गीतक आरम्भक चरण लुप्त भऽ गेल अथवा गीत-पञ्चकामे अनुसार पूर्व प्रयुक्त गीतक स्थानमे नवीने गीतक समावेश कऽ गेल गेल ।

'कुञ्जविहार' नाटकक शेष एकैस गोट गीतमे सत्तरहु गोट गीत अन्यहु गीत संग्रहमे पाओल जाइछ । जगज्ज्योतिर्मल्लक सबसँ प्रसिद्ध ओ मुख्यवस्थित गीतसंग्रह अछि 'गीत पञ्चाशिका' । एकर रचना शकसंवत् १२१० (१६२८ ई०)मे भेल छल । एहिमे 'कुञ्जविहार'क एघारहु गोट गीत भेटैत अछि जे निम्नलिखित संख्याक अछि । कोष्ठकमे 'गीतपञ्चाशिका'क संख्या भिदिष्ट अछि—२(७), ६(६), ११(२७), १२(४०), १५(२०), १७(२३), २१(३१), २२(३३), २३(३४), २४(३५), ३०(१२) । दोसर अछि 'गीत संग्रह' । एहिमे १४५ गोट गीत संकलित अछि । 'कुञ्जविहार'क पाँच गोट गीत एहुमे भेटैत अछि जकर संख्या कोष्ठकमे भिदिष्ट अछि—५(८१), १६(१३७), २५(७५), ३१(७७), ३२(७६) । तेसर 'नामाराम गीतसंग्रह'मे ५७ गोट गीत संकलित अछि । 'कुञ्जविहार'क तौतीसम गीत एहिमे पँतालिखम गीतक रूपमे भेटैत अछि । शेष चारि गोट गीत—१, २७, २८ ओ ३४ अन्य कोनहु संग्रहमे नहि पाओल जाइछ ते नवीन छि । अन्य संग्रहमे प्राप्त गीतक संग तुलनात्मक पाठालोचन कएने अवसर्त सामान्य पाठाला देखल जाइत अछि ।

सत्तरि

जगज्ज्योतिर्मल्ल कुञ्ज

'कुञ्जविहार' नाटक जाहि रूपमे एहन उपलब्ध अछि, तकरा नाटक मानव कठिन प्रतीत होइत अछि मुदा एकर आदि ओ अन्तमे एकरा नाटक कहल गेल अछि । किन्तु नाटकक जे शान्य लक्षण अछि अथवा नेपालीय नाटकक जे विशेषता सब होइछ अथवा जगज्ज्योतिर्मल्लक नाटकक जे स्वरूप भेटैत अछि ते एहि नाटकमे नहि अछि । एहि ठाम प्रस्तावनाक उल्लेख नहि अछि । आरम्भ होइत अछि मैथिली नान्दी गीतसँ । तदुपरि सूचना अछि 'सूत्रधार प्रवेश गीत' मुदा कोनो प्रवेश गीत नहि अछि । केवल अछि शिव स्तुति विषयक गीत । फेर सूचना बेल जाइछ 'सूत्रधार निस्तार गीत' किन्तु एकर शीतक कोनो गीत नहि अछि । नेपालक नाटकमे सूत्रधार गीतक संग वातालाप करैत नाटक, नाटककार, नाट्यावसरक सूचना दैत वेशवर्णना, नगरवर्णना, राजवर्णना, पुष्पाञ्जलि विषयक श्लोक वा गीत बढैत अछि । परन्तु एहि नाटकमे एहन किछु नै अछि । अतः एहि नाटकमे सूत्रधार-प्रवेशक सूचनाक कोनो प्रयोजन सिद्ध नहि होइछ ।

नाटकक मुख्य भागमे मंच निर्देश स्वतन्त्र रूपसँ नहि देल गेल अछि । अश्विनय सम्बन्धी कोनो संकेत नहि अछि । अवश्ये पात्रक प्रवेशक सूचक 'प्रवेश गीत' ओ 'निस्तार गीत' देल गेल अछि किन्तु एहि नाम पर प्रदत्त गीतमे पात्रक परिचय नहि अछि, अपितु ओकर मनोभाव वा संकल्पक वर्णन अछि । एक ठाम मात्र 'वृद्धा प्रवेश गीत' कहि कऽ देल गीतमे वृद्धाक रूप-स्वभावादिक उचित्यात्मक वर्णन अछि । एहिना पात्र-निष्क्रमणक सूचना 'निस्तार गीत' कहि कऽ देल गेल अछि ।

कथोपकथनमे मंचक प्रयोग नहि अछि । जतेक गीत अछि ते ककर उक्ति छि तथा ओकर विषयक उल्लेख कयल गेल अछि । किछु गीतमे केवल उक्ति-सूचना मात्र अछि, यथा—सख्युक्त गीत, कृष्णोक्ति गीत, राधोक्ति गीत, वृद्धाक कौतुक गीत, गोप्युक्त गीत, स्त्री उक्ति गीत, स्त्री विरह गीत, कृष्ण गोप्योक्तिप्रत्युक्ति गीत । किछु गीतमे उक्ति-सूचना नहि दऽ केवल विषय-सूचना दऽ देल गेल अछि, ककर उक्ति छि ते पूर्वपर प्रसंगसँ निर्धारणीय अछि ।

नेपालक नाटकमे ओ जगज्ज्योतिर्मल्लक नाटकक अन्तमे संस्कृतमे भरत-वाचक प्रयोगक संग देव-देवी वन्दना, शान्तिगीत, कुराम प्रायश्चित्त पान, आरती गीत इत्यादि रहैछ । 'कुञ्जविहार' नाटकमे भरतवाक्य नहि अछि, किन्तु शान्तिरस गीत, देवी विजय गीत ओ आरती गीतक प्रयोग अवश्य भेल अछि । यद्यपि एकर मात्र के करैछ ते अस्पष्ट अछि । जगज्ज्योतिर्मल्लक 'मुद्रित कुवलयान्न नाटक' चारि अंकमे विभाजित अछि । परन्तु 'कुञ्जविहार'मे एहन कोनो विभाजन नहि अछि ।

कुञ्जविहार नाटक

एकहत्तरि



गीत मात्रक प्रयोग होइती एकरा नाटक कहल गेल अछि । अवश्ये ई गीत सब कथा कथक अनुसार कथोपकथनक रूपमे व्यवहृत अछि । अतः एकरा 'गीति नाट्य' कहल जा सकैत अछि । हमर अनुमान अछि जे 'कुञ्जविहार नाटक'क उल्लेख प्रति सम्भवतः नाटकक प्रथम वा द्वितीय प्राकृतिक । 'पोछन गीतम्' ओ 'मुविज कुञ्जविहार नाटक' क सेहो एहन प्राकृत उपलब्ध अछि । संयोग वश उभयूक्त दुहुँ कृतिक नाट्य क सेहो उपलब्ध अछि परन्तु 'कुञ्ज विहार'क एहन दोसर प्रति उपलब्ध नहि भऽ सकल अछि ।

भाषाक दृष्टिसे नाटक विभुक्त मैथिलीमे अछि । गीत सब ककर उक्ति थिक तथा ओकर विषय-संकेत अवश्ये संस्कृतमे देल गेल अछि । गीतक भाषामे तत्सम शब्दक प्रधानता अछि । तद्भाव वा अर्द्धतत्सम शब्द ओ शब्दक कम अछि । किछु स्वान पर प्राकृत वा अवहट्ठ रूपक प्रयोग देखल जाइछ, यथा-रअणि < रजनी, सँदासी < सज्जासी < संयासी, कटमलि < कुतमासी । मध्यम-बुद्धक सम्बन्ध कारकक रूप दुइ स्थल पर क्रमशः 'गुनार' ओ 'तेरे' सामान्य प्रयोग 'तीहर' ओ 'तीरसे' भिन्न अछि । किछु शब्द पर नेवारी अविक प्रभाव सेहो अछि, यथा-भूल (सूर), कथिन (कठिन), गुजल (गुशन), लमसे (रमसे), गेर (गेल) इत्यादि । ई सब नेवारी लिपिकारक भ्रमबश भऽ गेल अछि । कारण अन्य स्रोतक पाठान्तरमे एकर शुद्ध रूप भेटैत अछि ।

गीत सबमे रागक निर्देश अनिवार्य रूपेँ अछि । केवल दस गीतमे कोनो राग-निर्देश नहि अछि । निर्दिष्ट राग सब थिक-आसावरी, कातरा, केदारा, कोराव, देशाव, घनाश्री, नट, पड़्डिया, पंचम, वराडि(ली), जेलावरी, भीम-पञ्चासी, भूषाल, भार, मल्लारि, मालव, राजविजय, वसन्त, श्री ओ सारङ्गी । कोनो-कोनो गीतक भणितक चरणमे सेहो राग निर्देश कऽ देल गेल अछि ।

किछु लघुगीतकेँ छोड़ि सर्वत्र भणितक प्रयोग भेल अछि । भणितमे कवि 'नृजगजोतिमल' 'रूपति जगजोतिमल' 'नृ जगजोति' अवस्था 'जगजोति नरेस'क प्रयोग कयलनि अछि ।

एहि नाटकक अंगीरस शृंगार अछि एवं हास्यवि अम्य रस अंत रूपमे आपल अछि । राधा-कृष्णक प्रेम स्रोतक वर्णन करितो, अन्य देव-देवीक प्रति श्रद्धाभित रहितो कवि निवभक्त छथि तकर प्रमाण एहुँ नाटकमे देखल जाइछ ।

नाटकक कथा वस्तु कल्पित अछि । कहबाक चाही जे कोनो कथानक नहि अपितु ओकर आभास मात्र अछि । अत्यन्त तुल्य काल्पनिक कथासूत्रक माध्यमे राधा-कृष्ण-विलासक वर्णन कयल गेल अछि । राधा एवं अन्य गोपी लोकनिक कृष्णक संग अद्भुत प्रेम, मान, विरह, मिलन आदिक चित्रण कयल गेल अछि ।

बहत्तरि

जगज्जोतिर्वल्लभ

कृष्णक कुञ्जविहार-सज्जा देखि गोपी सब हर्षित होइत छथि । कुञ्ज-विहारक स्थान वृन्दावनक मधुना-तीर पर अछि । गीतल-सुरमित तिमिर, नचरल पुवत तमगण एवं मधुकर-ध्वनि-पूरित वातावरण । छवहुँ ऋतु उास्थित । कृष्ण कहैत छथि—आइ एहि वनमे ई (पद्मकु) विराजित अछि । जे एहन समयमे अहाँक संग भेटय तँ कामना पूर्ण हो । कारण, सज्जित मधुख लऽ कामदेव दिन-राति मूनि रहल छथि । ई कहि कृष्ण राधाक वस्त्र श्रीवि लेत छथिन । राधा माथ मुका लेत छथि । पुनः राधा उलहनक स्वरमे कृष्णक रति-व्यापारक वर्णन करैत मधुर भर्त्सना करैत छथिन । फेर पूछैत छथिन जे हावमे गेणु ओ अमृत समान गान सुनि कोन नानिनीक मान रहि सकैछ । ताहि पर अहाँक आँखिक कटाक्षसे मेव कामदेवक जागत एहन, जेना घाओ पर मोन छोटल हो ! हे कृष्ण ! मनमे विचार, अवलोकै" मारि कौन फल पायब ?

कृष्ण घोषणा करैत छथि जे मधुजनकेँ विषयसत कऽ मधुरापुर जायब । फेर राधाक लग आवि यमारीति केलि-कौतुक करब । तखन राधा ओ अन्य गोपीगण दू गीतमे अपन विरह व्यक्त करैत छथि । एकरा बाद वृद्धा प्रवेश करैछ जकर रूप ओ स्वभावादिक वर्णन कयल गेल अछि । ओ बूढ़ि अछि । डाँड़ सुकल छैक । केश उज्जर छैक । केतकी सब दाँत छैक । दू आँखि संकुचित छैक । सरीसँ स्तन मूलि गेलैक अछि । बुढ़िया अछि तँ बहीर मुदा कौशल बड़ जनेत अछि । दूती-कार्यमे अधिक धनुरा अछि । एकक स्त्रीकेँ दोसर पुरुषसँ मिलबैत अछि । कुलटा वयस बितला पर कुट्टिनी बनि जाइछ ।

राधा पुनः प्रवेश कऽ कहैत छथि—हम मधुरा जा कऽ कृष्णकेँ देखब अगिला गीतमे राधाक विरहोक्ति अछि जे-प्रथम वर्णनमे अमृत-वृक्षकेँ तहि चीन्हि गेलहुँ । पाछाँ ओकर सौरभ अनुभूत भेल । ओकर गुण-स्मरण कऽ हृदय पीड़ित अछि । सूर्यकेँ देखि जेना सरसिज विकसित होइछ तहिना प्रेम बड़ि रहल अछि । मनमे होइछ जे हुनका लग चल जाइ । परन्तु सर्व-संकुल पथ देखि भय होइछ । दारुण विधाताक ई क्रूर जे मुजनसँ अनिलत ओ कुजनक संग भेटैछ !

दूती प्रवेश कऽ कहैछ जे कृष्णकेँ हम राधाक निकट अनयनि । ओ कृष्णक लग जाय राधाक विरहक वर्णन करैछ । शिष्ट कृष्ण राधाक सखिएक प्रति आकुण्ट भऽ ओकर अधराधुत पान करवाक हठ करैत छथि । 'छैल कुतुहल केनहि वन होअ' । से दूती रूप राधाक सखी कृष्णक आग्रहक बनीभूत भऽ जाइछ ।

ओ दूती अस्तव्यस्त रूपमे राधाक निकट अवैछ । राधा ओकर अस्त-व्यस्तताक कारण पूछै छथिन-साँस किएक ने चल होइत छ ? सखी-बन्दीसँ अहाँक लग अथलहुँ छै । राधा-अधरकान्ति घूसर किएक छ ? सखी बहुत-प्रकारे

कुञ्जविहार नाटक

तेहत्तरि



कृष्णके बात कहल । राधा-अलक-तिलक मेठा गेलह ? तखी-हुनक नेर पकड़लियनि ते' मेठा गेल । राधा-वस्त्रक बदला-बदली किएक ? सखी-अहाँक प्रतीति हेतु । राधा सब पुनि जाइत छथि आ कहैत छथिन—हे बुधियारि ! साथ नहि करह ।

कृष्ण पुनः कुञ्जमे प्रवेश करैत कहैत छथि—आइ राधाके देखल । हुनक अनुबन्ध छोड़ल नहि होइछ । आइ मनक सब आकांक्षा पूर्ण होइत ।

कहतल राधा कहैत छथि जे संसारमे सब जनेत अछि जे सौलिनिक समान अहितकर दोसर किछु नहि होइछ । ओकरा नित्य मधुर अस्तु दी तथापि ओ कटू मानैछ । सर्वश्रेष्ठक औषधि भऽ सकैछ मुदा ओकर नहि । जखन अपने प्रियतम अहितकर होथि तँ धैर्य नहि रहि जाइछ । राधा तेसर भीतमे कृष्णक कृत्य (दुर्लभक संग रतिक्रीड़ा)क भर्त्सना करैत छथि । कृष्णक संगहि समस्त पुरुष जातिक निन्दा करैत छथि । कृष्णो नारी वर्गक घोर निन्दा करैत छथि । राधा कहु शब्दमे एकर उत्तर दैत छथि । कृष्ण पुनः नतिमान् व्यक्तिक परिचय दैत छथि । ओही समयमे वृद्धा अपन काम-व्यापारक वर्णन करैत । फेर 'उपहास्य गीत' द्वारा ओकर विकृताकारक वर्णन कयल जाइछ । एहि ठाम ई स्पष्ट नहि अछि जेई गीत ककर उक्ति थिक । इहो स्पष्ट नहि होइछ जे बुद्धिवा अविते किएक अछि तथा एकराई कोन नाट्य-प्रयोजन सिद्ध होइछ । अस्तु । अनुपर गोपी सब कृष्णक आवरणक निन्दा करैत । एकरा जाना नाट्य-निर्देश अछि-कृष्ण गोप्योक्ति-प्रस्तुत गीत तथा एकहि गीतमे गोपी-कृष्णक उत्तर-प्रत्युत्तर बक्षित अछि । एहि ठाम राधाक उल्लेख नहि कऽ गोपीक उल्लेख कयल गेल अछि । मान-भंग भेला पर गोपी (ताहिमे राधा सेहो होयतीह) एवं कृष्ण मिलनक स्थितिमे आवि जाइत छथि ।

कथा भाग एतहि समाप्त भऽ जाइछ । एकर वाक्य गीतमे परम्पराक निर्वाह कयल गेल अछि जाहिमे तीन गोट काव्य गीत, एक गोट देवी-विरचित गीत तथा अन्तमे आरती गीत देखल गेल अछि । एहि पाँचो गीतक मुख्य कथासँ कोनो सम्बन्ध नहि छैक । एहिमे सांसारिक माया-मोहसँ ग्रस्त मनुष्यक चित्रण, संसारक निस्सारता, भगवद्भक्तिक महत्त्व आदिक वर्णन कयल गेल अछि ।

गीतक दृष्टिसँ अवश्यमे एहि नाटकमे उत्कृष्टता अछि । चिरंतन-वर्णन, मानव-जीवन, ओकर स्वभाव, ओकर अनुभव इत्यादिक वर्णनमे कवि स्वाभाविकताक आश्रय लेल अछि जाहिमें एकटा अभिनव काव्यास्वादक सृष्टि होइत अछि । सब मिला कऽ कुञ्जविहार नाटक मैथिली साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण कृति थिक तथा मेवाड़मे रचित मैथिली नाटकक एक प्रकारक रूपमे एकर गणना कयल जा सकैत अछि ।

चौहत्तर

जगज्जोतिर्मल कुत

## कुञ्जविहार नाटक

॥ ॐ नमस्तस्मै ॥

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ परदेवतायै नमः ॥ सावरणाईनारीश्वर नृत्यानाय  
स्वरूपेभ्यो नमः ॥ श्रीकुञ्जविहार नाटकं विव्यते ॥

प्रथम भागदी गीत ॥ राजविजय ॥ जति ॥

अनख सुख जनि तिमिहु नयने, जत खभित देख पावहु यदने ॥  
बराभय बूल हाम डमरु बजावे, ताहि शिव परसादे सबे सुख पावे ॥  
गजानन पठानन सुत दुहु सङ्गे, मङ्गलदायक रूप अछ बङ्गरङ्गे ॥  
चाँद गाङ्ग तनु तिनु घबल प्रयासे, नृप जगजोति मन मुख पद आसे ॥१॥

॥ सुतधार प्रवेश गीत ॥ मालव ॥ अस्तारा ॥

विभूति भूषण भव मणिमय हारे, चरन चलन शिर सुरसरि धारे ॥  
तिलक अमिश्रकर मरल अहारे, मदन दहम' हर संसारक' सारे ॥  
त्रिभूल डमरु कर बसह पयाने', तुमार सक्षप शिव केसो नहि जाने ॥  
कहे' नृप जगजोति सुन सशि भाले, राग मालव गावइ इहो अठगाले ॥२॥

॥ सुत निरखार गीत ॥ आसावरी ॥ प्र ॥

कुञ्जविहार हरि छाज रे,  
गोपी रावे हरजित आप रे ॥३॥

॥ राधाकृष्णशोरलंकार प्रवेश ॥ वसन्त ॥ ए ॥

जाहि वह जमुना तीर, सीतल सुरहि समीर ॥  
नव दले सरअर सोह, मधुकर बुनि सब मोह ॥  
ताहि विरिवावन भाष, हमर हृदय पुने बास ॥  
ताहा कए करिए विलास, जसो पहु पुरावए बास ॥  
नृप जगजोतिमल' जानी, सोर गति एके सजानी ॥४॥

२. गीत पञ्चाशिका (७)—१. बहन २. संसारक ३. पयाने ४. कह ।

रामोल्लेख अछि—वर चम्पना गोड़ा ॥ मालव ॥ अस्तारा ॥

कुञ्जविहार नाटक

पञ्चहत्ति



॥ पद्मस्तुतर्णना गीतं ॥<sup>१</sup> पद्मिनी ॥ प्र<sup>२</sup> ॥

तमस्य वसन्त विविध घन सोह, परिहरि लाज मुनिह का मोह ॥  
अनु करिए बिलास ॥ प्र ॥<sup>३</sup>

तप अतु सबहि चुषीसल श्रीव<sup>४</sup>, विरहिणि रखणि दिमहि दिन श्रीन ॥  
आरिग धरहर सबहि सोहाव, जलधरे धोएल धुरि महि ताव ॥  
सरद सोहाबोन ससधर भास, राँक पखाजल जल परमासे<sup>५</sup> ॥  
हिमअतु चुवती हवमा लाय, दिन अके रसिक विरह घटि जाय ॥  
मिशिर सबहि मन तपन उछाह, कमलनि अन हिमजले देल वाह ॥  
नृपजगजोतिमल मने गुणि गाव, छओ<sup>६</sup> अनु रस पुनमत जन पाव ॥३॥

कृष्णोक्ति गीतं ॥ धनाश्री ॥ ए ॥

सखि आज,  
इ वन तेहि विराज, जयो पान तोहर समाज ॥  
साजल धनु धरि काम, अहमिस भम एहि ठाम ॥  
एत बोलि विहसि निहारि, पुलकित देह मुरारि ॥  
वसन करखि हरि खेल, राधासुख अवनत भेल ॥  
नृप जगजोतिमल गाव, हुरक धरण मन लाव ॥६॥

राधोक्ति गीतं भूपाली ॥ प्र ॥

असह वेवन सहि न जाए, के विधि रहव कह उपाय ॥  
वसन हरैत ससरि गेल, तखने कुछ नखे खत देल ॥  
लाजे कर बुद्ध हृदय देल, सर गदगदे वाणि न भेल ॥  
एवाम तनु सबे कपडि होए, प्रकृति हुनकि रह न मोख ॥  
केलि समग्रहि लाज न मान, शिव गति नृप जगजोति मान ॥७॥

कृष्णोक्ति गीतं ॥ नट ॥ ए ॥

कुलबहु नारि का लाज सोहावए केलि अवसर अनुरीत  
तोहर ववन देखि धरि न होअ मन न करह मान समीत ॥  
राधा सेरे चञ्चल लोचन जोरा ॥ प्र ॥  
तोहर दास पद मोख बहू मानओ न करह हवय मलान ॥  
मदन बोधाधि मोर एक बोधघ तोहर अघर मधु पान ॥  
हम किछु विहसि निहारह सुन्दरि, परिहरि पिसुनक पास ॥

५. गीत संग्रह (८१)—१. (अभाव) २. ख ३. एहि अनु ऐसन होअ ॥ प्र ॥

४. जीन ५. परमासे ६. छव ।

छेहत्तरि

जगजोतिमल कुल

कतहु न पाए अभावस रखनी, कुमुदिनि होअ बिलास ॥

नृप जगजोति अपन मति गावए, राधा कान्हु बिलास

नूतन नारि नागर बुह कौतुक शिव पए पुरवधि आस ॥१॥

॥ स्त्री उक्ति गीतं ॥ पद्मिनी ॥ ए ॥<sup>१</sup>

कर लए जेणु अनिध सन गान, तखने रहत की मानिनि मान ॥  
ताहि उपरे<sup>२</sup> तुम नयन तरङ्ग, धत खरिया जके मार बनङ्ग ॥  
अरे कान्हु<sup>३</sup> अरे कान्हु<sup>४</sup> हेरिअ विचारि, की फल पखोदह धवला मारि ॥  
नृप जगजोतिमल हरि गुण गाव, तुअ पद पंकज सबहि सोहाव ॥६॥

॥ कृष्ण निस्तार गीतं ॥ प्र ॥

सन एक हमहु जाएव मथुरापुर दप बंधु अन विसवासे,

करव मथारिते केलि कुतुहल फिरि बाए राधाशिक पास ॥१०॥

॥ स्त्री विरह गीतं ॥ कोराव ॥ ख<sup>१</sup> ॥

बत अगुराग लाए भेल दूर, सुमरि सुमरि<sup>२</sup> हिय हो मोर मूल<sup>३</sup> ॥  
चाँद चमन<sup>४</sup> सखि गरल समान, सब तह कथिन<sup>५</sup> कुमुम शर<sup>६</sup> वान ॥  
मधुरे मधुरे सरे कोकिल गाव, विहि मोर वाम मरच पए भाव ॥  
कएल कनक सम तल्लिक विचार, प्रेम कसीटि कसि बुझल<sup>७</sup> भञ्जार ॥  
नृप जगजोति कह सुनह सयानि, आओत बालभु तुअ गुण जानि ॥११॥

॥ स्त्री विरह गीतं ॥ आसावरी ॥ ए ॥

हरि धुनि हरि मुनि<sup>१</sup> हिय साल, हरि पेखि हरि रस सहए न पार ॥  
हरि देखि हरि हरि हरि जे सँताव, हरि बैसि हरि मोहि किछु न सोहाव ॥  
सरसिजदल हरि जके जिव डोल, हरि सम होअ मोहि हरि वन रोल ॥  
हरि भेल हार हरिहि पए बुझ<sup>२</sup>, हरि सम लोचन किछु न सूझ ॥  
हरि पदे नृप जगजोतिमल गाव, हरिमनी हरि अनुअहि पाव ॥१२॥

बृद्धा प्रवेश गीतं ॥ सारङ्गी ॥ प्र ॥

कूबरि दूबरि विरह वेआकुल, दुलि काज पर अधिक चहूर ॥

सनसन केस केतकि सन दात, आधि बुह कूड सावल कुष गात ॥

९. गीत पञ्चाशिका (६)—१. पुनः कृष्ण स्तुति नवारी ॥ पद्मिनी ॥ ख, ए ॥

२. उपर ३. जकि ४. कान्हु ५. हलिय ६. मारि

११. तत्रैव (२७)—१. सखी प्रति विरहिण्या उचितः २. चो ३. सुमरि

४. भूर ५. चमन ६. कठिन ७. सर ८. बुझल ।

१२. तत्रैव (४०)—१. विरहिण्याः स्त्रिया उचितः कूट २. धुनि मुनि ३. बूझ ।

कृष्णविहार नाटक

सतहत्तरि



बुद्धिवा बहिरि कोसल कत जान, धान नारि मेरावए जान ॥  
कुलटा वस गेले होख कुटनी, नृप जगजोति खिल भगत धनी ॥१३॥

राधा पैसार ॥ धनाधी ॥ ए ॥  
जाएव मधुर पुरि कान्हू देखव ताहि  
भोरे वस होएत सबे राहि  
की देखइ जु ॥१४॥

॥ राधोक्ति गीत ॥ आसावरी ॥ गण्डलवनि ॥<sup>१</sup>

वरसने न चिरहस<sup>२</sup> चान्दन गाछे, अनुमति सीरभे, ब्रह्मल पाछे ॥  
तमु गुन समुलि हृदय होअ सूर, पेस बाढ जैसे सरसिज चूर ॥  
पुनु मन करिअ जाइअ तमु पासे, फणि बेडल देखि उपज तरासे ॥  
शिव शिव दारुण विधिक अकाजे, सुजन समित हो<sup>३</sup> कुजन समाजे ॥  
नृप जगजोति कह एहे सब भाव, पुरुष<sup>४</sup> पुण्य पए खंडाव ॥१५॥

॥ दूती पैसार गीत ॥ वराडि ॥ प्र ॥

काम्युक चरण भेटि आज,  
आनव राहिक समाज ॥१६॥

॥ सव्युक्त गीत ॥ मालव ॥ ख ॥<sup>१</sup>

कुमुने साजल सेज परिहर दूर, तोहे बिनु हृदय होअए तमु सूर ॥  
जतन करए तुज दरसन लाई, अविरल नयन मोर<sup>२</sup> बहि जाई ॥  
अनुखन तोहरे घरए धंयाम, लए कुंकुम लिह तनु अनुमान ॥  
पए पडि पुनु पुनु कह अनुतापे<sup>३</sup>, खने हस खने रस करए विलापे ॥  
नृप जगजोतिमल ई रस गाव, इति उकुति वृष आठओ भाव ॥१७॥

कृष्णोक्ति गीत ॥ कामरा ॥ प ॥

अकामिक बिहि मोर देखि एहि (हा)बहि, पाओल निधि परिहरि कजोन जान ॥  
उकुति भाव तोर सुखल विशेषिए, तोह सम चातुरि के होएत जान ॥  
अनल उरल हनह हिय हनरे, मोह धनुक तुअ बोचन बाण ॥  
ताहि बेलाधि आधि मोहि राखह, बैए अघर मधु पीवूष पान ॥  
छैल कुवूले के नहि वस होअ, ईन भगति नृप जगजोति जान ॥१८॥

१५. गीतसंघिका (२०)—१. अद्यापदेश नचारी ॥ आसावरी ॥ ए ॥

२. बिल्लल ३. टरासे ४. होअ ५. पुरुष ।

१७. सार्व (२३)—१. दूत्यास्त्रोतिरहे अठठयाधि कपन ॥ मालव ॥ खर्जति

२. मोर ३. अनुताप ४. विलाप ।

अठहत्तरि

जगज्योतिर्मल कृत

॥ राधोक्ति गीत ॥<sup>१</sup> मालव ॥ प्र ॥

किए नहि वरि होअ सास<sup>२</sup>, दूती किदहु, तोरिछे, अएलहु तुज पास, रामा ॥  
अघर धूसर भेल काति<sup>३</sup>, दूती किदहु, कहल कहनि कत भाति<sup>४</sup>, रामा ॥  
अलक तिलक गेल दूर, दूती किदहु, तमु पए पडू ते चूर, रामा ॥  
वसन फेर किए भेल, दूती किदहु, तुज विसवाति<sup>५</sup> लागि सेल, रामा ॥  
नृप जगजोति कह जानि, दूती<sup>६</sup> किदहु, लाय न करह सयानि, रामा ॥१९॥

॥ कृष्ण पैसार गीत ॥ वेलावरी ॥ प्र ॥

आज देखलि मोअे राधा, कि कुञ्ज वन,  
हृदयक अनुबंध तेजि न हो मोहि पुरत सकल मन साधा ॥२०॥

राधोक्ति गीत ॥<sup>१</sup> धनाधी ॥ प्र ॥

सौतिनि सम नहि जान, जगत सहित सहे जान, सजनी सेर<sup>२</sup>  
जैओ मधुर दिख नीत, ओ सवे मानए तीत ॥  
साय हासल<sup>३</sup> होअ सार, ओकरा नहि परकार ॥  
पहु होअ अपन बहीत, नहि धैरज हो<sup>४</sup> चीत ॥  
नृप जगजोति एहे भान, राखव बुहक<sup>५</sup> मान ॥२१॥

॥ राधोक्ति गीत<sup>१</sup> ॥ देवाध ॥ ए ॥

अधमक सङ्ग रङ्ग तोहे छाज, अबुध बुझाओव कजोन परि आज ॥  
पुरुष जाति सवे जहा तहा<sup>२</sup> बूल, लखए न पार<sup>३</sup> ककर की भूल ॥  
सब घर सुनिअ तोहर उपहास, तोह सजो केवि करअ कजोन आस ॥  
नागर भाव गमार न सूख, विक पञ्चम की गायस बूख ॥  
नृप जगजोति कह भाव अनेक, से वृष जकरा हृदय विवेक ॥२२॥

॥ कृष्णोक्ति गीत<sup>१</sup> ॥ कोराव ॥ चौ<sup>२</sup> ॥

नारी नीर नील अनुसरई, कत अवरोधिजे<sup>३</sup> धिर न रहई ॥  
कपट कोपे<sup>४</sup> घर कुलटा रीति, पुरुष दोस कहए जग भीति ॥

१९. गीतसंघ (१३७)—१. (अभाव) २. सात ३. कामि ४. भाति ५. तुज विसवास ६. दूती ।

२१. गीत पञ्चाशिका (३१)—१. सपत्न्याः सपत्नी निन्दा २. सर ३. हासल ४. होअ ५. बुहक ।

२२. तम्र (३३)—१. पुरुषहृदये स्त्रिया उचितः ॥ २. तोहे ३. जहा तहा ४. पर ।

इन्द्रविहार नाटक

उनाधी



कतेजी मनाईल<sup>४</sup> अपनि न होई, कर परपञ्च हृदय घर मोई ॥  
 मुख अपशेषि देखि परिणामा, समुचित नाम धरति विधि वामा ॥  
 नृप जगजोति वचन किछु सुनु, टूटल हार गांधिव पुनु पुनु<sup>५</sup> ॥२३॥

॥ राधोक्ति गीत ॥ मल्लरि ॥ प्र ॥

चातर चकमक चिर नहि रहई, कुपुह्य पेम विवस वृद्ध बहई ॥  
 हुनकर दोस घरह की मोई, सहजक कुटिल सोस नहि होई ॥ ध्रुव ॥  
 बाँसक उलझा जल जवो<sup>६</sup> घरई, जतनहु राखिअ अवत पए घरई ॥  
 काचक टार काम नहि फवई, अवसर भांगि जोर नहि जवई ॥  
 लल्लि के आस जोवन<sup>७</sup> मोर घटई, लाभ के सोभे मूलो<sup>८</sup> धन परई ॥  
 ए सखि लल्लिक नाम नहि लेवई, सुनितहि हृदय परामय पवई ॥  
 नृप जगजोति अपन मति भनई, विघटल पेम सुदिन सँघटवई ॥२४॥

॥ कृष्णोक्ति गीत<sup>९</sup> ॥ धनाश्री ॥ ए ॥

आकरे आकरे<sup>१</sup> होअ कत हीर, भाति भाति<sup>२</sup> उपजए कत चीर ॥  
 नागर नागि रुखअर<sup>३</sup> फूल, तुरगे तुरगे बढ अन्तर भूल ॥  
 नजहि गएग्रहि<sup>४</sup> बहुत विशेष, ओहि मतिमन्त विचारोए<sup>५</sup> देख ॥  
 अमुज बुझए ओहि सकल समान, जतनहु सिध (न)<sup>६</sup> सिधउले पपाण ॥  
 नृप जगजोतिमल कएल विचार, तिनि विधि विधि निरमाओल सँसार ॥२५॥

॥ वृद्धाक कौतुक गीत ॥ भीम पलासी ॥ ए ॥

बाह्यन वनिआ आबोर कत जाति रे, दश पाञ्चे खेपओ सगरिए राति रे ॥  
 मुखे दुखे कोपे भेख घरजोगि सँडाओ, मोहि खओ केलि कर कटमालि तपसी ॥  
 दिन बुझ चारि गेले पाछ पचताओ रे, धनक कारणे पुनु वह दिस घाओ रे ॥  
 अमल ओवन धन मदे मन भाति रे, हमर सज्जे<sup>७</sup> सेह कर कत भाती रे ॥  
 मोजे बढ रसिआ हहे सब जान रे, कौतुके नृप जगजोतिमल मान रे ॥२६॥

॥ उपहास्य गीत ॥ श्री ॥ चो ॥

सारत गमनि दिघर तुअ गात, बकुल पार केतकि सन दात ॥  
 सुन्दरिया रे ॥

२३. तत्रैव (३४)—१. स्त्रिया उपहासे पुरुषोक्तिः ॥ २. चोक ३. अकरोधि ॥  
 ४. कपटकोप ५. मनाइल ६. गांधिव पुनु ।

२४. तत्रैव (३५)—१. प्रतिपुरुषोपहासेन स्त्रिया उक्तिः ॥ मल्लारी ॥ २.  
 जओ ३. अति पीभन ।

२५. गीत संग्रह (७५)—१. (अभाव) २. आकरे आकरे ३. भाति भाति  
 ४. रुख अर ५. गएग्रहि ६. विचारिए ७. सिध न ।

खरसी

जगजोतिमल हृदय

कुश्र नयन देखि भौंह गेल भांगि, वनचर आन अँसन बुधि कानि ॥  
 जवन रोव खन हस कह कन भाति, बिहुर क्षरिप गेर कोहुक कानि ॥  
 एहन रमनि देखि के नहि भूल, पुरुष समाज जतए तत घुर ॥  
 रूप अनुसार नृप जगजोति गाव, शिव परवाद परिहास भुसाव ॥२७॥

॥ गोप्युक्त गीत ॥ बालव ॥ ए ॥

जकरा नहि थिक लाज, ताहि सत्रो करव की काज, रे छिया ॥  
 अपने बोलि नहि मानी, प्रकृति सोहर मन [शानी, रे छिया ॥  
 जानुक सिंगेह कालि नाही, किछु न होअए निरवाही, रे छिया ॥  
 कुजन वचन विषवासे, जीव लेख दए आगे, रे छिया ॥  
 कह नृप आनजोति, तेहि जने त्रिभुवन जीति, रे छिया ॥२८॥

कृष्ण गोप्योक्ति प्रत्युक्ति गीत ॥ केदार ॥ प्र ॥

परित नेल मोर भाग, तोहर चरण मन, लाग ॥  
 तोहि मोर हृदयक हार, सकल संसारक सार ॥  
 मोजो अति अमुज गोमारि, आवे अनु तेजह मुरारि ॥  
 तोह पास होख छड़ाए, प्रेम बाइल कहाँ जाए ॥  
 नृप जगजोतिमल मान, हर छाडि गति नहि जान ॥२९॥

॥ शान्ति रस गीत ॥ वराली ॥ ए ॥<sup>१</sup>

ममता मोह<sup>२</sup> निवारि, देहक तत्त्व विचारि ॥ रे मग सर ॥  
 जओ गुरुगम अवधान, अह निशि<sup>३</sup> घरए ध्यान ॥  
 ताहि ते उतरिय पार, विषम जलधि संसार ॥  
 नृप जगजोति एही गाव, अवहु तेजह जडभाव ॥ ॥३०॥

॥ शान्ति रस गीत<sup>४</sup> ॥ आसावरी ॥ प्र ॥

कायिनि रस बस ककरो बोल, काहुक मधुर मनोहर नील ॥  
 ए शिव ए शिव थिक जंजाव, अनुघन जीव नरावए कान ॥ ध्रुव ॥  
 कतह छाडि काहु किछु न सोहाव, कानहि कान कहिति काहुभाव ॥  
 छदे-वले-कले केओ धने पए साव, माया बन्ध करओ<sup>५</sup> के बाध ॥  
 देखि संसार<sup>६</sup> पसार असार, हमे जानल हर पद पए सार ॥  
 नृप जगजोति मन हमे निरवीत, करह उधार भवानी ईश ॥ ३१॥

३०. गीत पञ्चवारिका (१२)—१. बुजें खरिअ कथनान्तरं योग प्रकार नचारी  
 ॥ वराली ॥ ए ॥ २. नेह ३. निशि ।

३१. गीत संग्रह (७७)—१. (अभाव) २. बंधकर ३. संसार ।

कुञ्जविहार नाटक

एकामी



॥ शान्ति रस गीत ॥ चराली ॥ श्री ॥

अवुझक आने जे गुन गाव, अपन पराफव<sup>१</sup> अपने लाव ॥  
विनु बुलले पुनु सोर<sup>२</sup> डोलाव, कामे सुनए मन वह (दिश)<sup>३</sup> लाव ॥  
ओधि<sup>४</sup> तगर छन ओधि न सुन, गुणि जन परिसम बिहूओ न सुन ॥  
बहिरा के अओ कहिह संदेश<sup>५</sup>, हृदय सेवन हो बदन कलेश ॥  
कहु विचारि जगजोति नरेत<sup>६</sup>, आहि विवेक ताहि दिश उपदेश ॥३२॥

॥ देवी विजयि गीत ॥ पंचम ॥ सु<sup>१</sup> ॥

कधुकंठभ महिषासुर मारल दुष्ट आदि देव तव<sup>१</sup> जेकरे,<sup>२</sup>  
धूम्रलीचन जमघरहि पठाओल अष्टमुण्ड रक्तबीज सह रे<sup>३</sup> ॥  
समरे भवानि हाथे बैरि निव गेल सुरमुनि मने<sup>४</sup> हरेख भेला ॥  
सबे दिक्पाल अपन पद<sup>५</sup> धापल सयक विवाद खमहि दूर गेला ॥  
ताहि उपर गुम्भ विगुम्भ<sup>६</sup> विडारल चौदिस जय जय किमर गाव<sup>७</sup> ॥  
जहा अहा तंकट देवि उधरि लेहु नृप जगजोतिमल भगतिहि लावे ॥३३॥

॥ आरति गीत ॥ मारु ॥ ए ॥

पवन आनि अवकंधित कए कहु सरिर पाप मय जारी,  
पिठय आनि पुनु ताहि जिआए कहु लह(म)से देव निखारी ॥  
हे गन ए विधि आरति लाव,  
काम क्रोध खोम मोह महाखिनु जे विधि कुरहि पराए ॥ ध्रुव ॥  
अभिल अतल जल भूमि अकासहि पुनु उपजाइअ देह,  
पर शिव पद पर परम जोति लय ताहि सओ राखिअ नेह ॥  
जरा मरण जमराज पराभव चिन्तहु इ सब उपाय,  
न रह अज्ञान महातम आरति तेजहि मङ्गल पाय,  
माया पास पसार देखि कहु दिने दिने उपजु तरास,  
गुरु गम बुझि नृपति जगजोतिमल शिवक भगति पए आस ॥ लूप ॥

॥ इति कृष्णविहार नाम नाटकं संपूर्णम् ॥

३२. तत्रैव (७६) — १. (अभाव) २. पराभव ३. सील ४. हृदय ५. ओधि  
६. सम्देश ७. नरेत ॥

३३. नानाराग गीतसंग्रह (४५) — १. अभाव २. भैरवी ॥ प्र ॥ ३. मुनि  
४. जकरे ५. हरे ६. मुने ७. अपने पदे ८. गुम्भ विगुम्भ ९. किमर गावे ॥